॥ ओ३म् ॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सारे संसार को श्रेष्ठ बनाओ

वैदिक सन्ध्या-अग्निहोत्र

पुण्य स्मृति में सप्रेम भेंट
स्मरणीय माता श्रीमती कौशल नागपाल जी
व पिता श्री पृथ्वी राज नागपाल जी, फरीदाबाद

संकलनकर्त्ता
श्री सुरेश शास्त्री जी
आर्य समाज सैक्टर-28-31, फरीदाबाद

मुद्रक
मयंक प्रिंटर्स
2199/64, नाईवाला, करोलबाग, नई दिल्ली-110005
फोन:011-41548503, मो. 09810580474

PRAYER

O Omnipotent, Omnipresent God! you are extending, your grace to all ofus from the infinite course oftime Only you are there who fulfills the desires and wills of mankind at every moment. You, always are kind enough to provide me all our best and beneficials without seeking demands from us. A great peace and happiness lies on your affectionating lap. A person who is fortunate to have the shelter at your feet always feels a great satisfaction and avails eternal happiness and desired ojbects in life.

O Almighty father! Be merciful to provide us ture faith and belief. Be affectionate to embrace us onto your nectonrors lap. Raise us high from the ill feelings like selfishness and narrowness which impure our hearts. Make us capble to vanish the ill feelings and uproot the lusts like sex, angerness, weedi-ness, attachment, jealousy and maliceness. We seek your kindness and for you to overcome with internal tendencies of our heart.

O extremely pious God! Generate virtuous tendencies in us. Forgiveness, simplicity, stability, fearlessness, pridelessness be our assets. Make our body healthy and sound, mind subtle and progressive ; our soul poius and pure.

Only touching you may develop all our powers and strengths. Be our heart full of kindness and sympathy. Make our speach molodious and vision affectionate. Throw the light of knowledge and learning in us. Make our personality great and charming.

O God shower your blessings. Be our life dedicated in your lotus feet that always extend help to the poor. Kindly gratify us taking our lives in your service.

Om Shantih ! shantih! shantih.

प्रार्थना

हे सर्वाधार सर्वेश्वर सर्वान्तर्यामी, सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक परमेश्वर! आप अनन्तकाल से अपने उपकारों की वर्षा किये जाते हो। प्राणिमात्र की सम्पूर्ण कामनाओं को तुम्हीं प्रतिक्षण पूर्ण करते हो। हमारे लिए जो शुभ तथा हितकर है उसे तुम बिना मांगे ही हमारी झोली में डालते जाते हो। तुम्हारे आंचल में अविचल शान्ति तथा आनन्द का वास है। तुम्हारी चरण शरण की शीतल छाया में परम तृप्ति है, शाश्वत सुख की उपलब्धि है तथा सब अभिलषित पदार्थों की प्राप्ति है।

हे जगत् पिता परमेश्वर! हममें सच्ची श्रद्धा तथा विश्वास हो। हम तुम्हारी अमृतमयी तथा प्रेममयी गोद में बैठने के अधिकारकी बनें। अन्तःकरण को मलिन बनाने वाली स्वार्थ तथा संकीर्णता की सब क्षुद्र भावनाओं से हम ऊंचे उठें। काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या, द्वेष इत्यादि कुटिल भावनाओं तथा सब मलिन वासनाओं को हम दूर करें। अपने हृदय की आसुरी प्रवृत्तियों के साथ युद्ध में विजय पाने के लिए हे प्रभो! हम आपको पुकारते और आपका आंचल पकड़ते हैं।

हे परम पावन प्रभो! हममें सात्विक वृत्तियां जागृत हों। क्षमा, सरलता, स्थिरता, निर्भयता, अहंकार शून्यता, इत्यादि शुभ भावनाएं हमारी सम्पत्ति हों। हमारे शरीर स्वस्थ तथा परिपुष्ट हों। मन सूक्ष्म तथा उन्नत हो, जीवात्मा पवित्र तथा सुन्दर हो। तुम्हारे स्पर्श से हमारी सारी शक्तियाँ विकसित हों। हृदय, दया तथा सहानुभूति से भरा रहे। हमारी वाणी में मिठास हो तथा दृष्टि में प्यार हो। विद्या तथा ज्ञान से हम परिपूर्ण हों। हमारा व्यक्तित्व महान तथा विशाल हो।

हे प्रभो! अपने आशीर्वादों की वर्षा करो दीनातिदीनों के मध्य में विचारने वाले तुम्हारे चरणार्विन्दों में हमारा जीवन समर्पित हो। इसे अपनी सेवा में लेकर हमें कृतार्थ करो।

ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

विषय सूची

हवन यज्ञ क्यों करें?	5
प्रार्थना क्या है?	6
प्रातः काल की प्रार्थना के मन्त्र	7
ब्रह्मयज्ञः वैदिक सन्ध्या	9
गायत्री मन्त्र	10
पुरोहित वरण	21
आचमन मन्त्राः	21
ईश्वर-स्तुति-प्रार्थना मन्त्र	22
हवन मन्त्र	27
आघारावाज्याहुति मन्त्र	31
प्रातःकालीन मन्त्र	31
सायंकालीन मन्त्र	32
व्याहृति मन्त्र	35
स्विष्टकृत आहुति मन्त्र	36
पूर्णाहुति मन्त्र	36
अष्टाज्याहुति मन्त्र	39
बलिवैश्वदेव यज्ञ विधि	42
घृत लगाने का मन्त्र	43
दर्शेष्ट अमावस्या यज्ञ	44
पौर्णमासेष्टि यज्ञ	44
व्रत धारण करने का मन्त्र	45
यज्ञोपवीत मन्त्र	45
अथ स्वस्तिवाचनम्	46
अथ शान्तिकरणम्	59
जन्मदिवस विधि	71
वैवाहिक वर्षगांठ	73
मंगल यज्ञ	75
यज्ञ प्रार्थना	77
यज्ञ महिमा	78
भजन	79
सुखी बसे संसार सब	82
आरती	84
माता-पिता का ऋण	86
आशीर्वाद	87
प्रार्थना	88
शान्ति पाठ	90
राष्ट्रीय प्रार्थना	93

हवन यज्ञ क्यों करें?

हवन का स्वास्थ्य रक्षा के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध है। अंग्रेजी भाषा में स्वास्थ्य रक्षा के लिए जिस शब्द का प्रयोग होता है वह है 'हाईजीन'। हमें तो यह अपने 'हवन' शब्द का ही अपभ्रंश प्रतीत होता है। हवन और हाईजीन दोनों का प्रयोजन भी एक ही है। हवन से दुर्गन्ध का नाश और सुगंध का विस्तार होता है। इसी सुगंध द्वारा वायु में आक्सीजन तथा ओजोन जैसी प्राणप्रद वायु का संचार होने लगता है। हवन की यह विशेषता है कि इससे न केवल दुर्गन्ध का नाश ही होता है अपितु सुगंध का विस्तार भी होता है। प्रत्येक नासिका साक्षी है। आधुनिक वैज्ञानिकों ने हवन पर खोजकर इसे आश्चर्यजनक पाया। विदेशों में भी आर्यसमाज के साथ-साथ हवन-यज्ञ भी पहुंचा तो विदेशी लोगों का भी ध्यान इस ओर गया। अब ये हवन पर विशेष खोज एवं अनुसंधान कर रहे हैं। आपको यह जानकर सुखद आश्चर्य होगा कि अमेरिका जैसे सुदूर देश में अग्निहोत्र युनिवर्सिटी स्थापित हो चुकी है। 'फाइव फोल्ड पाथ' नामक संस्थान ने वाशिंगटन में अग्निहोत्र युनिवर्सिटी की स्थापना कर अमेरिका, जर्मनी तथा कतिपय अन्य देशों में एवं भारत में भी यज्ञ के परीक्षण किये हैं एवं अखण्ड यज्ञों के परिणामों को अत्युत्तम अनुभव कर रहे हैं। अपने देश में पण्डित वीरसेन जी वेदश्रमी, डॉ. कुन्दन लाल अग्निहोत्री, महात्मा प्रभुआश्रित जी, स्वामी विज्ञानानन्द सरस्वती जी तथा अन्य अनेक महानुभावों ने हवन यज्ञ की वैज्ञानिकता पर खोज की है। भारत के सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक तथा आर्यसमाज के सुविख्यात संन्यासी स्वामी डॉ. सत्यप्रकाश जी ने वैज्ञानिक दृष्टिकोण से यज्ञ पर एक पुस्तक लिखी है। उन्होंने सिद्ध किया है कि ब्रह्माण्डीय वायुमण्डल की शुद्धिकरण का एकमात्र उपाय हवन यज्ञ ही है। यज्ञ से ही द्यौः शान्ति होगी, यज्ञ से ही अन्तरिक्ष शान्ति होगी तथा पृथ्वी शान्ति होगी और सर्वशान्ति होगी, तभी शान्तिरेव शान्तिः की अनुभूति होगी और सामा शान्तिरेधि अपने में भी शान्ति होगी-अन्यथा नहीं।

प्रार्थना क्या है?

'प्रार्थना' शब्द का अर्थ 'मांगना' या 'याचना' नहीं है परन्तु 'चाहना' है। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने प्रार्थना को 'हृदय के भाव को सम्मुख रखना' कहा है। महात्मा नारायण स्वामी ने प्रार्थना को 'इच्छाशक्ति का विकास' कहा है। जिससे जीवन की दिशा को नया मोड़ मिलता है, जिसमें उसकी सफलता निहित है। इच्छाशक्ति से पूर्ण पुरुषार्थ की कामना उत्पन्न होती है और उत्तम कर्मों की सिद्धि होती है। महर्षि दयानन्द के अनुसार प्रार्थना से अभिमान का नाश होता है जो मनुष्य का भयंकरतम शत्रु है। प्रार्थना अन्तःकरण को शुद्ध एवं सशक्त बनाती है और यह पापमय जीवन से उबारने के लिए दिव्य नौका का काम करती है। स्वामी विवेकानन्द जी कहते हैं कि आत्मशुद्धि के लिए 'प्रार्थना' से बढ़कर कोई अन्य अस्त्र संसार में नहीं है।

प्रार्थना केवल सर्वशक्तिमान, सर्वअन्तर्यामी, सर्वव्यापक परमेश्वर से ही करनी उचित है। प्रार्थना द्वारा की गई पुकार को परमात्मा अवश्य सुनता है। सन्धिवेला (प्रातः एवं सायं) प्रार्थना के लिए एक विशेष महत्व रखता है। निश्चित समय पर प्रार्थना करने से सम्पूर्ण जीवन प्रार्थनामय हो जाता है जिससे कि शक्ति और शान्ति की प्राप्ति होती है। प्रार्थना के लिए एकान्त स्थान का होना भी आवश्यक है जिससे कि मन की एकाग्रता उत्पन्न होती है। अन्तःकरण से मूक प्रार्थना में तल्लीन होकर मनुष्य स्वयं को भूलकर विश्वात्मा से आत्मिक वार्तालाप करता है।

पापमय जीवन का त्याग कर निष्काम भावना से ही प्रार्थना स्वीकार होती है। प्रार्थना से पूर्ण प्राणायाम, आचमन तथा मार्जन मन की शीघ्र शान्ति में सहायक होते हैं। इससे आहार, विचार तथा आचार में शुद्धता आती है तथा साधक इससे ऊंचा उठता है। प्रार्थना में परमात्मा से अपनी हितकर मेधाबुद्धि की कामना करनी उचित है। प्रार्थना की स्वीकृति में विलम्ब से हमें व्याकुल नहीं होना चाहिए। सच्चे मन से की गई प्रार्थना कभी बेकार नहीं जाती। समुद्र में गोता बार-बार लगाने से मोती अवश्य हाथ लगते हैं।

न्यायकारी परमात्मा की कर्मफल व्यवस्था में सच्ची आस्था रखने वाला पापों के फल भोग से बचने की प्रार्थना कभी नहीं करता। वह तो आगामी पापों से छुटकारा पाने की प्रार्थना करता है और वह अवश्यमेव स्वीकृति होती है। प्रार्थना का तात्पर्य उद्योग तथा पुरुषार्थ की उत्पत्ति एवं उपाय करना है। पुरुषार्थ सदा प्रारब्ध से प्रबल होते हैं। प्रार्थना वह कुंजी है जिसके द्वारा सुख विशेष के द्वार खुल जाते हैं। परमात्मा पुरुषार्थी की सहायता अवश्य करते हैं।

प्रातःकाल की प्रार्थना के मन्त्र

सदा स्त्री-पुरुष 10 बजे (दस) शयन और रात्रि के पिछले प्रहर वा चार (4) बजे उठके प्रथम हृदय में परमेश्वर का चिन्तन करके धर्म, अर्थ का विचार करना और धर्म तथा अर्थ के अनुष्ठान वा उद्योग करने में यदि कभी पीड़ा भी हो तथापि धर्मयुक्त पुरुषार्थ को कभी न छोड़ना चाहिए, किन्तु सदा शरीर और आत्मा की रक्षा के लिए युक्त आहार-विहार, औषध-सेवन, सुपथ्य आदि से निरन्तर उद्योग करके व्यावहारिक और पारमार्थिक कर्त्तव्य-कर्म की सिद्धि के लिए ईश्वरोपासना भी करनी कि जिस परमेश्वर की कृपादृष्टि और सहाय से महाकठिन कार्य भी सुगमता से सिद्ध हो सके। इसके लिए निम्नलिखित मन्त्रों से ईश्वर की प्रार्थना करनी चाहिए। **—ऋषि दयानन्द** (संस्कारविधि, गृहाश्रमप्रकरण)

प्रभाती

ओं प्रातरग्निं प्रातरिन्द्रं हवामहे प्रातर्मित्रावरुणा प्रातरश्विना।
प्रातर्भगं पूषणं ब्रह्मणस्पतिं प्रातः सोममुत रुद्रं हुवेम॥ १॥

अर्थ—प्रभात वेला में स्वप्रकाशस्वरूप परमैश्वर्य के दाता और परमैश्वर्ययुक्तः प्राण, उदान के समान प्रिय और सर्वशक्तिमान, सूर्य चन्द्र को जिसने उत्पन्न किया है उस परमात्मा की हम स्तुति करते हैं और भजनीय, सेवनीय, ऐश्वर्ययुक्त, पुष्टिकर्त्ता, अपने उपासक, वेद और ब्राह्माण्ड के पालन करने हारे, अन्तर्यामी, प्रेरक और पापियों को रूलाने और सर्वरोगनाशक जगदीश्वर की हम स्तुति, प्रार्थना करते हैं।

प्रातर्जितं भगमुग्रं हुवेम वयं पुत्रमदितेर्यो विधर्ता।
आध्रश्चिद्यं मन्यमानस्तुरश्चिद्राजा चिद्यं भगं भक्षीत्याह॥२॥

अर्थ—पाँच घड़ी रात्रि रहे जयशील, ऐश्वर्य के दाता, तेजस्वी, अन्तरिक्ष के सूर्य की उत्पत्ति करने और सूर्यादि लोकों को विशेष करके धारण करनेहारा, सब ओर से धारणकर्त्ता, जिस किसी का भी जाननेहारा, दुष्टों का दण्डदाता और सबका प्रकाशक है, जिस भजनीयस्वरूप का इस प्रकार सेवन करता हूँ और इसी प्रकार भगवान् परमेश्वर सबको उपदेश करता है कि तुम जो मैं सूर्यादि जगत् का बनाने और धारण करनेहारा हूँ,

उस मेरी उपासना किया करो और मेरी आज्ञा में चला करो, जिससे तुम लोग सदा उन्नतिशील रहो, इससे हम लोग उसकी स्तुति करते हैं।

भग प्रणेतर्भग सत्यराधो भगेमां धियमुदवा ददन्नः।
भग प्र णो जनय गोभिरश्वैर्भग प्र नृभिर्नृवन्तः स्याम॥ ३॥

अर्थ–हे भजनीयस्वरूप, सबके उत्पादक, सत्याचार में प्रेरक ऐश्वर्यप्रद, सत्यधन के देनेहारे, सत्याचरण करने हारे को ऐश्वर्यदाता आप परमेश्वर! हमको इस प्रज्ञा को दीजिए और उसके दान से हमारी रक्षा कीजिए, आप गाय आदि और घोड़े आदि उत्तम पशुओं के योग से राज्यश्री को हमारे लिए प्रकट कीजिए। हे भग! आपकी कृपा से हम लोग उत्तम मनुष्यों से युक्त और बहुत वीर मनष्यवाले अच्छे प्रकार होवें।

उतेदानीं, भगवन्तः स्यामोत प्रपित्व उत मध्ये अह्नाम्।
उतोदिता मघवन्त्सूर्यस्य वयं देवानां सुमतौ स्याम॥४॥

अर्थ–हे भगवन्! आपकी कृपा और अपने पुरुषार्थ से हम लोग इसी समय प्रकर्षता=उत्तमता की प्राप्ति में और इन दिनों के मध्य में ऐश्वर्ययक्त और शक्तिमान् होवें, और हे परमपूजित असंख्य-धन देनेहारे! सूर्यलोक के उदय में पूर्ण विद्वान्, धार्मिक, आप्त लोगों की अच्छी, उत्तम प्रज्ञा और सुमति में हम लोग सदा प्रवृत्त रहें।

भग एव भगवाँ अस्तु देवास्तेनु वयं भगवन्तः स्याम।
तं त्वा भग सर्व इज्जोहवीति स नो भग पुरएता भवेह॥५॥

अर्थ–हे सकलैश्वर्यसम्पन्न जगदीश्वर! जिससे आपकी सब सज्जन निश्चय करके प्रशंसा करते हैं, सो आप हे ऐश्वर्यप्रद! इस संसार और हमारे गृहाश्रम में अग्रगामी और आगे-आगे सत्य कर्मों में बढ़ानेहारे हूजिए, जिससे सम्पूर्ण ऐश्वर्ययक्त और समस्त ऐश्वर्य के दाता होने से आप ही हमारे पूजनीय देव हूजिए, उसी हेतु से हम विद्वान् लोग सकलैश्वर्य-सम्पन्न होके सब संसार के उपकार में तन, मन, धन से प्रवृत्त होवें।

ब्रह्मयज्ञ : वैदिक सन्ध्या

(विधिभाग)

सन्ध्या–जिसमे भली-भांति परमेश्वर का ध्यान किया जाए, वह सन्ध्या है।

सन्ध्या-समय–रात और दिन के संयोग-समय दोनों सन्धियों में सब मनुष्यों को परमेश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना करनी चाहिए।

आवश्यक निर्देश–जैसे समाधिस्थ होकर योगी लोग परमात्मा का ध्यान करते हैं, वैसे ही सन्ध्योपासना किया करें–

१. पहले बाह्य, जलादि से शरीर की शुद्धि।

२. राग-द्वेष, असत्यादि के त्याग से भीतर की शुद्धि करनी चाहिए।

३. कुशा वा हाथ से मार्जन करें।

४. तत्पश्चात् शुद्ध देश, पवित्र आसन, जिधर की ओर वायु हो, उधर को मुख करके नाभि के नीचे से मूलेन्द्रिय को ऊपर सङ्कोच करके, हृदय के वायु को बल से निकालके यथाशक्ति रोकें। यह एक प्राणायाम हुआ। इसी प्रकार कम-से-कम तीन प्राणायाम करें, नासिका को हाथ से न पकड़ें। इस समय परमेश्वर की स्तुति, प्रार्थना, उपासना हृदय से करें।

५. इससे आत्मा और मन की स्थिति सम्पादन करें।

६. इसके अनन्तर गायत्री मन्त्र से शिखा को बाँधकर रक्षा करें, ताकि केश इधर-उधर न बिखरें।

विशेष– ईश्वर का अच्छी प्रकार ध्यान करना सन्ध्या है। सन्ध्याकर्त्ता को चाहिए कि वह मन्त्रानुसार प्रभु के गुणानुवाद में तन्मय होकर, अपने गुण-कर्म-स्वभाव वैसे ही बनाने के लिए अपने प्रभु से आत्म-निवेदन करे। ईश्वर के गुणों की अनुभूतिपूर्वक किया गया आत्म-निवेदन निश्चय ही लाभदायक होता है। वस्तुतः सन्ध्या उस जगत्पति की आज्ञापालन के लिए शक्ति व पवित्रता प्राप्त करने का प्रयासमात्र है, अतः साधक को चाहिए कि व्यवहारकाल में सन्ध्या में किये गये आत्म-निवेदन के विपरीत आचरण कदापि न करें। मैं तो यहां तक कहना चाहूंगा कि अगर हमने

सन्ध्या को सांसारिक व्यवहारों में नहीं फैलाया तो सांसारिक व्यवहार और विचार हमारी सन्ध्या में फैलकर व्यवधान डालते रहेंगे। इस प्रकार से हमारी सन्ध्या एक औपचारिक दिखावा ही न रह जाए। हमें उसका वांछित लाभ मिले, इसके लिए हमने हर प्रकरण के अनुसार 'आत्म-निवेदन' की आयोजन की है, इसे समय व सामर्थ्य के अनुसार बढ़ाया जा सकता है!

सन्ध्या उपासना विधि

गायत्री मंत्र

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।

Om bhurbhuvah svah. Tat Saviturvarenyam bhargo Devasya dhimahi. Dhiyo yo nah prachodyat.

O Lord, Thou art the Protector and life breath of all dispeller of miseries and bestower of happiness. Thou art the creator and most acceptable pure intelligence, possessing eternal qualities. May we possess thine qualities and have thine inspiraton.

तूने हमें उत्पन्न किया, पालन कर रहा है तू।
तुझसे ही पाते प्राण हम, दुःखियों के कष्ट हरता है तू।
तेरा महान तेज है, छाया हुआ सभी स्थान।
सृष्टि की वस्तु-वस्तु में, तू हो रहा है विघमान।
तेरा ही धरते ध्यान हम, मांगते तेरी दया।
ईश्वर हमारी बुद्धि को, तू श्रेष्ठमार्ग पर चला।

अथ आचमन मन्त्र:Achamanam

जलपात्र से दाहिने हाथ की हथेली में जल लेकर निम्नलिखित मन्त्र को एक ही बार बोलकर तीन आचमन करें। इससे कण्ठस्थ कफ की थोड़ी-सी निवृत्ति होती है। जल न हो तो आचमन न करें। मन्त्रोच्चारण अवश्य करें-

ओ३म् शन्नो देवीरभिष्टयआपो भवन्तु पीतये। शंयोरभिस्रवन्तु नः।। —यजु.: 26.12

Om Shanno devir-abhishtaya, apo bhavantu pitaye, Shamyo-rabhisravantu nah.(1)

सर्व व्यापक, सबका प्रकाशक और सबको आनन्द देने वाला परमेश्वर मनोवाचिघत सुख और प्राणीनन्द की प्राप्ती के ए हमारा कल्याण करे और हम सब और हम सब और से सुख की सर्वदा वृष्टी करें:

अथेईन्द्रियस्पर्श मन्त्राः

बाएँ हाथ की हथेली में जल लेकर सीधे हाथ की मध्यमा और अनामिका (दूसरी और तीसरी) अंगुलियों से जल-स्पर्श करके पहले दाहिने और फिर बाएँ अङ्गों का निम्नलिखित मन्त्रों से स्पर्श करें—

ओं वाक् वाक्। —इससे मुँह का दायाँ, बायाँ भाग।

ओं प्राणः प्राणः। —इससे नाक का दायाँ और बायाँ भाग।

ओं चक्षुःचक्षुः। —इससे दायीं और बायीं आँख।

ओं श्रोत्रम् श्रोत्रम्। —इससे दायाँ और बायाँ कान।

ओं नाभिः। —इससे नाभि।

ओं हृदयम्। —इससे हृदय।

ओं कण्ठः। —इससे कण्ठ (गला)।

ओं शिरः। —इससे मस्तक।

ओं बाहुभ्यां यशोबलम्। —इससे दोनों बाहु (भुजाएँ)।

ओं करतलकरपृष्ठे। —इससे दोनों हथेली और पृष्ठभाग।

हे ईश्वर, मेरे मुख से वाक् शक्ति हो: मेरे नाक में सुंघने की शक्ति हो, मेरी आंखों में देखने की शक्ति हो, मेरी कानों में सुनने की शक्ति, मेरी भुजाओं में बल हो, मेरी जय अग्ने शक्ति हो सार्मघ हो मेरा सारा शरीर ओर सारे अठां स्वस्थ व निरोग हो और शक्तितो शालीनता हो।

Indriya-Sparsh

Om vak vak, Om Pranah Pranah, Om chakshuh, chakshuh, Om shrotram shrotram, Om nabhih, Om hridayam, Om kanthah, Om shirah, Om bahubhyam yashobalam, Om kartal karaprishthe. (2)

(After sipping water thrice, touch your mouth, nose, eyes ears and knees)

अथेश्वर प्रार्थना पूर्वक मार्जनमन्त्राः

पुनः इसी प्रकार बायीं हथेली में जल लेकर दाहिने हाथ की उन्हीं दोनों अंगुलियों से शरीर के अङ्गों पर निम्नलिखित मन्त्रों से मार्जन करें, अर्थात् जल छिड़कें–

ओं भूः पुनातु शिरसि। –इससे सिर पर ।

ओं भुवः पुनातु नेत्रयोः। –इससे दोनों नेत्रों पर।

ओं स्वः पुनातु कण्ठे। –इससे कण्ठ (गले) पर।

ओं महः पुनातु हृदये। –इससे हृदय पर।

ओं जनः पुनातु नाभ्याम्। –इससे नाभि (टूँडी) पर।

ओं तपः पुनातु पादयोः। –इससे दोनों पैरों पर।

ओं सत्यं पुनातु पुनः शिरसि। –इससे पुनः सिर पर।

ओं खं ब्रह्म पुनातु सर्वत्र। –इससे सभी अङ्गों पर।

हे प्राणरूप, दुःख नाशक, आनन्दरूप महान उत्पादक, ज्ञान रूप, सत्यरूप ओर व्यापक, ईश्वर, मेरे शिर, नेत्र, कण्ठ, हृदय, नाभी पैर आदि सभी अंग को पवित्र करें।

Marjanam

Om bhuh punatu shirashi, Om bhuvah Punatu netrayoh, Om svah punatu kanthe, Om mahah punatu hridye, Om janah punatu nabhayam, Om tapah punatu padayoh, Om satyam punatu punah shirasi, Om kham brahm punatu sarvatra.(3)

अथ प्राणायाम मन्त्राः Pranayam

ओं भूः। ओं भुवः। ओं स्वः। ओं महः।
ओं जनः। ओं तपः। ओं सत्यम्।। तैत्ति. प्र. 10.27

शरीर को सीधा रख, दोनों हाथों की अधरखुली-सी मुट्ठियों की पीठ घुटनों के ऊपर रखकर भीतर की वायु को बलपूर्वक बाहर निकालकर जितनी देर रोक सकें, बाहर ही रोके रखें, फिर धीर-धीरे भीतर जानें दें और वहाँ भी कुछ देर रोकें। फिर बाहर निकालकर जितनी देर रोक सकें, रोकें। यह क प्राणायाम हुआ। ऐसे-ऐसे कम से कम तीन और अधिक-से-अधिक 21 प्राणायाम करें वायु को रोकर ऊपर लिखे मन्त्र का अर्थ-विचारपूर्वक चिन्तन करना चाहिए।

Om bhuh, Om bbuvah, Om svaah, Om mahah, Om janah, Om tapah, Om satyam,

O Lord, Thou art Life breath and O, dispeller of miseries, grealest of all blissful creator of all just and embodiment of truth.

अथ अघमर्षण मन्त्राः Aghamarshanam

तत्पश्चात् सृष्टिकर्त्ता परमेश्वर और सृष्टि-क्रम का विचार नीचे लिखे मन्त्रों से करें ओर जगदीश्वर को सर्वव्यापक, न्यायकारी, सर्वत्र, सब जीवों के कर्मों का द्रष्टा-ऐसा निश्चित मानके पाप की ओर अपने आत्मा और मन को कभी न जाने दें, किन्तु सदा धर्मयुक्त कर्मों में वर्तमान रक्खें-

विशेष-यह अघमर्षण प्रकरण ऋषि ने मन की पाप-भावनाओं को निर्मूल करने के निमित रक्खा है, जिसमें सृष्टि-रचना का वर्णन है। वेद कहता है **"ऋतस्य धीतिर्वृजनानि हन्ति"** ऋत् (सृष्टि-नियमों) का चिन्तन-मनन पाप-वासनाओं को नष्ट कर देता है। इस आत्म-निवेदन को इसी भावनानुसार रक्खा जा रहा है, हमारा सच्चा चिन्तन इसे सार्थक कर देगा।

ओ३म् ऋतंञ्च सत्यञ्चाभीद्धात्तपसोऽध्यंजायत।
ततो रात्र्यंजायत ततः समुद्रोऽअर्णवः॥१॥
ओ३म् समुद्रादर्णवादधि संवत्सरोऽअजायत।
अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी॥२॥
ओ३म् सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमंकल्पयत्।
दिवं च पृथिवीं चान्तरिक्षमथो स्वः॥३॥ –ऋ. 10.190.1-3

Om ritam cha satyam chabhiddhat tapaso adhajayata, Tato ratry ajayata Tatah sumudro arnavah.(1)

Om samudradarnavad dadhi samvatsaro ajayata. Aho ratrani vidadhad vishwasya mishato vashi.(2)

Om suryachandramsau dhata yatha purvamakalpayat.
Divam Cha prithivim chantarikshamatho svah.(3)

(Rgveda 10.190.1.2.3)

सर्वत्र प्रकाशमन ईश्वर के अनन्त सामर्थ्य से वेदविद्या और त्रिगुणात्मक प्रकृति उत्पन्न हुई। उसी परमात्मा के सामर्थ्य से प्रलय उत्पन्न हुआ और उसी परमात्मा से महासमुद्र उत्पन्न हुए॥१॥

सारे ब्रह्माण्ड को सहज ही अपने वश में रखनेवाले परमेश्वर ने समुद्र की उत्पत्ति के पश्चात् संवत्सर=वर्ष और फिर इनके विभाग, दिन, रात, क्षण, मुहूर्त्त आदि को रचा॥2॥

सब जगत् को धारण और पोषण करनेवाले परमात्मा ने जैसे पूर्वकल्प में सूर्य और चन्द्र रचे वैसे ही इस कल्प में भी रचे हैं। ठीक उसी प्रकार द्युलोक, पृथिवीलोक, अन्तरिक्ष और आकाश में जितने लोक हैं उनका निर्माण भी पूर्वकल्प के अनुसार ही किया है॥३॥

तत्पश्चात् इस मन्त्र से तीन आचमन करें–

ओ३म् शन्नों देवीरभिष्टंयआपों भवन्तु पीतयें।
शंयोरभिस्रंवन्तु नः॥ –यजु. : 26.12

Om Shanno devir-abhishtaya, apo bhavantu pitaye, Shamyo-rabhisravantu nah.(1)

इस मन्त्र से पुनः तीन आचमन करें। तदनन्तर गायत्र्यादि मन्त्रों के अर्थविचारपूर्वक परमेश्वर की स्तुति, अर्थात् परमेश्वर के गुणों और उपकारों का ध्यान कर पश्चात् प्रार्थना करें।

अथ मनसापरिक्रमा मन्त्राः
Mansa-Parikrama

नीचे लिखे मन्त्रों से सर्वव्यापक परमात्मा की स्तुति–प्रार्थना करें। इन छह मन्त्रों से परम प्रभु ओम् की सत्ता को सब दिग्–दिगन्तरों में अनुभव करते हुए सम्पूर्ण विश्व के साथ द्वेष–भावना को नष्ट करके मैत्रीभाव स्थापित कर निर्भय, निःशङ्क, उत्साही, आनन्दित और पुरुषार्थी रहें।

ओ३म् प्राची दिगग्निरधिपतिरसितो रक्षितादित्या इषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। योऽ३स्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः॥१॥ –अथर्व.का.3, सू. 27, मन्त्र1

(A mental vosion of God and feeling neighbourliness with him)

Om prachi dig-agnir-adhipatirasito rakshita ditya ishavah. Tebhyo namo dhipatibhyo namo rakshitribhyo nama ishubhyo nama ebhyo astu. Yosman dweshti yam vayam dvismastam vo jambhe dadhmah.(1) (Athrva 3.27.1)

पूर्व दिशा या सामने की ओर ज्ञानस्वरूप परमात्मा सब जगत् का स्वामी है। वह बन्धन–रहित भगवान् सब ओर से रक्षा करता है। सूर्य की किरणें उसके बाण, अर्थात् रक्षा के साधन हैं। उन सबके गुणों के अधिपति ईश्वर के गुणों को हम लोग बारम्बार नमस्कार करते हैं। जो ईश्वर के गुणों को हम लोब बारम्बार नमस्कार करते हैं। जो ईश्वर के गुण और ईश्वर के रचे पदार्थ जगत् की रक्षा करनेवाले हैं और पापियों को बाणों के समान पीड़ा देनेवाले हैं उनको हमारा नमस्कार हो। जो अज्ञान से हमारा द्वेष करता है और जिससे हम द्वेष करते हैं उन सबकी बुराई को उन बाणरूपी मुख के बीच में दग्ध कर देते हैं॥1॥

ओ३म् दक्षिणा दिगिन्द्रोऽधिपतिस्तिरश्चिराजी रक्षिता पितर इषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः।।२।।

Om dakshina dig-indro dhipatitiraschiraji rakshita pitara ishawah. Tebhyo namo dhipatibhyo namo rakshitri bhyo nam ishu bhyo nama ebhyo astu yosman dveshtiyam vayam duishmastam vo jambhe dadhmah.(2) (Atharva 3.27.2)

दक्षिण दिशा में सम्पूर्ण ऐश्वर्ययुक्त परमात्मा सब जगत् का स्वामी है। कीट–पतंग, वृश्चिक आदि से वह परमेश्वर रक्षा करनेवाला है। ज्ञानी लोग उसकी सृष्टि में बाण के सदृश हैं। उन सबके........ इत्यादि पूर्ववत्।।2।।

ओ३म् प्रतीची दिग्वरुणोऽधिपतिः पृदाकू रक्षितान्नमिषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः।।३।।

Om pratichi dig varuno dhipatih pridaku rakshitannam ishavah. Tebhyo namo dhipatibhyo namo rakshitribhyo nama ishubhyo nama ebhyo astu. Yosman dveshtiyam vayam dvishmastam vo jambhe dadhmah.(3) (Atharva 3.27.3)

पश्चिम दिशा में वरूण–सबसे उत्तम परमेश्वर सबका राजा है। वह बड़े–बड़े अजगर, सर्पादि विषधर प्राणियों से रक्षा करनेवाला है। पृथिव्यादि पदार्थ उसके बाण के सदृश हैं, अर्थात् श्रेष्ठों की रक्षा और दुष्टों की ताड़ना के निमित्त हैं। उन सबके .... इत्यादि पूर्ववत्।।3।।

ओ३म् उदीची दिक् सोमोऽधिपतिः स्वजो रक्षिताशनिरिषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः।।४।।

Om udichi dik somodhipatih svajo rakshita-shanir-shavah

Tebhyo namo adhipatibhyo namo rakshatrabho nama ishubhyo nama ebhyo astu. Yosman dvesti yam vayam dvismastam vo jambhe dadhmah. (Atharva 3.27.4)

उत्तर दिशा में सोम-शान्त्यादि गुणों से आनन्द देनेवाला जगदीश्वर सब जगत् का राजा है। वह अजन्मा ओर अच्छी प्रकार रक्षा करनेवाला है। विद्युत उसके बाण हैं। उन सबके...... इत्यादि पूर्ववत्।।4।।

ओ३म् ध्रुवा दिग्विष्णुरधिपतिः कल्माषग्रीवो रक्षिता वीरुध इषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः।।५।। –अथर्व. 3.27.5

Om dhruva dig vishnur-adhipati kalmashagriv rakshita vuridha ishavah. Tebhyo namo adhipatibhyo namo rakshi tribhyo nama ishubhyo nama ebhyo astu yosman dwesti yam vayam dvishmastam vo jambh dadhmah.(5) (Atharva 3.27.5)

नीचे की दिशा में विष्णु-सर्वत्र व्यापक परमात्मा सब जगत् का राजा है। चित्रग्रीवावाला परमेश्वर सब प्रकार से रक्षा करता है। नाना प्रकार की वनस्पतियाँ उसके बाण के सदृश हैं। उन सबके...... इत्यादि पूर्ववत्।।5।।

ओ३म् ऊर्ध्वा दिग्बृहस्पतिरधिपतिः श्वित्रो रक्षिता वर्षमिषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः।।६।। –अथर्व. 3.27.6

Om urdhava dig Bhrihaspatir-adhipatih shwitro rakshita varshamishaavah. Tebhyo namo adhi-patibhyo namo rakshitribhyo nama ishubhyo nama ebhyo astu. Yosman dweshti yam vayam dwishmas-tam vo jambhe dadhmah.(6) (Atharva 3.27.6)

ऊपर की दिशा में बृहस्पति-वाणी, वेदशास्त्र और आकाश आदि बड़ी-बड़ी शक्तियों का स्वामी सबका अधिष्ठाता है। अपने शुद्ध ज्ञानमय स्वरूप से हमारा रक्षक है। वृष्टि उसके बाणरूप, अर्थात् रक्षा के साधन हैं। उन सबके..........इत्यादि पूर्ववत्।।6।।

उपस्थान मन्त्राः Upasthanam

तत्पश्चात् परमात्मा का उपस्थान, अर्थात् परमेश्वर के निकट मैं और मेरे अति निकट परमात्मा है, ऐसी बुद्धि करके करें–

ओ३म् उद्वयंतमसस्परि स्वुः पश्यन्तऽउत्तरम्।
देवंदेवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम्॥१॥ –यजु. 35.14

Om udvayam tamasas-pari svah pashyanta uttaram. Devam devatra suryam aganma Jyortiruttamam.(1)

हे परमेश्वर! आप अन्धकार से पृथक् प्रकाशस्वरूप हैं। आप प्रलय के पश्चात् भी सदा विद्यमान रहते हैं। आप प्रकाशकों के प्रकाशक, चराचर के आत्मा और ज्ञानस्वरूप हैं। आपको सर्वश्रेष्ठ जानकर श्रद्धापूर्वक हम आपकी शरण में आये हैं। नाथ! अब हमारी रक्षा कीजिए।

ओ३म् उदुत्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः।
दृशे विश्वाय सूर्यम्॥२॥ यजु. 33.31

Om udutyam jatavedasam devam vehanti ketavah. Drishe vshwaya suryam.(2) (Rig. 1.50.10)

वेद की श्रुति और जगत् के कर्त्ता के नाना पदार्थ झण्डों के समान उस दिव्य गुणयुक्त, सर्वप्रकाशक, चराचर के आत्मा, वेदप्रकाशक भगवान् को विश्वविद्या की प्राप्ति के लिए उत्तम रीति से जनाते और प्राप्त कराते हैं।

ओ३म् चित्रंदेवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः। आप्रा द्यावापृथिवीऽअन्तरिक्षꣳ सूर्यऽआत्मा जगतस्तस्थुषश्च स्वाहा॥३॥ –यजु. 7.42

Om chitram devanamudagadanikam chakshur mitrasya Varunasyagneh. Apra Dyava prithvi antariksham Surya atma jagats tasthushahch swaha. (3)]

जो सब देवों में श्रेष्ठ और बलवान् है, जो सूर्यलोक, प्राण, अपान और अग्नि का भी प्रकाशक, जो द्युलोक, अन्तरिक्ष और पृथिवीलोक में व्यापक है, जो जड़ और चेतन जगत् का आत्मा=जीवन है, वह चराचर जगत् का प्रकाशक परमात्मा हमारे हृदयों में सदा प्रकाशित रहे।

ओ३म् तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतꣳ शृणुयाम शरदः शतं प्र ब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात्॥४॥ —यजु. 36.24

Om tach-chkshur devahitam purastach-chhukram, uchchrat pashyema sharadah shatam, Jivema sharadah shatam, Shrinuyama shradah shatam, prabravama sharadah shatam, Adinah syama sharadah shatam, Bhuyashcha shardah shatat.(4)

उस सबके द्रष्टा, धार्मिक विद्वानों के परमहितकारक, सृष्टि से पूर्व, पश्चात् और मध्य में सत्यस्वरूप से विद्यमान रहनेवाले और सर्वजगदुत्पादक ब्रह्म को सौ वर्ष तक देखें। उसके सहारे से सौ वर्ष तक जीएँ। सौ वर्ष तक उसका ही गुण-गान सुनें। उसी ब्रह्म का सौ वर्ष तक उपदेश करें। उसी की कृपा से सौ वर्ष तक किसी के अधीन न रहें। उसी ईश्वर की आज्ञापालन और क ृपा से सौ वर्ष के उपरान्त भी हम लोग जीवें, सुनें, सुनावें और स्वतन्त्र रहें।

गायत्री मन्त्रः Gayatri Mantra

ओ३म्। भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्॥५॥ —यजु. 36.3

Om bhur bhuvah svah. Tat Saviturvarenyam bhargo Devasya dhimahi. Dhiyo yo nah prachodyat.

अर्थ–(ओं) यह प्रभु का मुख्य नाम है। वह **(भूः)** प्राणों का प्राण **(भुवः)** दुःखनाशक **(स्वः)** सुखस्वरूप है। **(तत्)** उस **(सवितुः)** सकल जगत् के उत्पादक **(देवस्य)** प्रभु के **(वरेण्यं)** ग्रहण करने योग्य **(भर्गः)** विशुद्ध तेज को हम **(धीमहि)** धारण करें। **(यः)** जो प्रभु **(नः)** हमारी **(धियः)** बुद्धियों को **(प्रचोदयात्)** सन्मार्ग में प्रेरित करे।

अथ समर्पणम्

इस प्रकार से सब मन्त्रों के अर्थों के चिन्तन से परमेश्वर की सम्यक् उपासना करके आगे समर्पण करें–

हे ईश्वर दयानिधे! भवत्कृपयाऽनेन जपोपासनादिकर्मणा धर्मार्थकाममोक्षाणां सद्यः सिद्धिर्भवेन्नः।

Hai Ishwara! Dayanidhe Bhavatkripaya Anen Japopasandi Karmna dharmarth Kama Mokshanam sadyah sidhir bhavennah.

अर्थ– हे परेश्वर दयानिधे! आपकी कृपा से जप और उपासना आदि कर्मों को करके हम धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की सिद्धि को शीघ्र प्राप्त होवें।

अथ नमस्कार मन्त्रः

अन्त में निम्नलिखित मन्त्र द्वारा परम पिता परमात्मा को विनीतभाव से नमस्कार करें।

ओं नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शंकराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च॥

–यजु. 16.41

Om namah Shambhavaya Cha Mayobhavaya Cha namah Shankaraya Cha Mayaskaraya Cha, namah Shivaya Cha Shvataray Cha.

अर्थ– जो सुखस्वरूप और संसार के उत्तम सुखों को देनेवाला, कल्याण का कर्त्ता, मोक्षरूप और धर्म के कामों को ही करनेवाला, अपने भक्तों को धर्म के कामों में युक्त करनेवाला, अत्यन्त मंगलरूप और धार्मिक मनुष्यों को मोक्ष देनेहारा है, उसको हमारा बारम्बार नमस्कार हो।

ओ३म् शान्ति शान्ति शान्ति ओ३म्

पुरोहित–वरण
Purohi-Varanam

ओं तत्सत् श्रीब्रह्मणो द्वितीये प्रहरार्धे श्री श्वेतवातराहकल्पे वैवस्वत मन्वन्तरेऽष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथम चरणे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे आर्यावर्त्तैक देशान्तर्गते पुण्यक्षेत्रे देशे–संवत्सरे अयने–ऋतौ– मासे–पक्षे–तिथौ–वासरे–नक्षत्रे–राशि स्थिते चन्द्रे–राशि स्थिते सूर्ये– नामा–अहं भवन्तं पुरोहित (ब्रह्मा) रूपेण वृणे॥

Om Tat Sat Sri brahmano ahni dwitiye Prardhe Sri swet nrarah kape Vaivaswat manvantare Astavinsatitame kali Yuge Kali Pratham Charane Jambudwipe Bharat khande Aryavartaik deshantragatai Punyakhetre-deshe-samvatsare-ayane-rietau-mase-pakhe-tithau-vasarai--nakhatre-rashisthite- Kamayai bhawantam puruohit (Brahma) repen Vrine.

ओं व्रतोऽ स्मि Om vrito asmi.

आचमनमन्त्राः
Aachman-Mntrah

यज्ञ करने के लिए बैठे सब लोग अपने जलपात्र से दायें हाथ की हथेली पर कुछ जल लेकर नीचे लिखे मन्त्रों से तीन आचमन करें।–

ओम् अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा।

Om Amritopastaranamasi Swaahaa.

ओम् अमृतापिधानमसि स्वाहा।

Om Amritapidhanmasi Swaahaa.

ओम् सत्यं यशः श्रीर्मयि श्रीः श्रयतां स्वाहा।

Om Satyam Yashah Srimayi Shrih Shrayataam Swaahaa

इस मंत्रों से तीन बार आचमन करें।

After chantng each Mantra do the Aachaman Once.

इन्द्रिय स्पर्शमन्त्राः
Indrya Sparsh Mantraah

ऊपर लिखे तीन मन्त्रों से आचमन करके बाएं हाथ की हथेली से जल लेकर दायें हाथ के बीच की दो अंगुलिया से नीचे लिखे छः मन्त्रों से अंग स्पर्श और सातवें से सारे शरीर पर जल से मार्जन करें।

1. **ओं वाङ्म आस्येऽस्तु (मुख)**

1. Om Waang Ma Asyey Astu. (mouth)

2. **ओं नसोर्मे प्राणोऽस्तु (नासिका)**

2. Om Nasormey Praano Astu. (nose)

3. **ओं अक्ष्णोर्मे चक्षुरस्तु (आंख)**

3. Om Akshnormey Chakshurastu. (eye)

4. **ओं कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु (कान)**

4. Om Karnyormeyshortram Astu. (ears)

5. **ओं बाह्वोर्मे बलमस्तु (बाहु)**

5. Om Bahvormey Balamastu. (arms)

6. **ओं ऊर्वोर्मे ओजोऽस्तु (पैर)**

6. Om Oorwormey Ojoast. (Knees)

7. **ओं अरिष्टानि मेऽङ्गानि तनूस्तन्वा में सह सन्तु (शरीर)**

7. Om Arishtani Me angaani Tanustanwaa M Sah Santu. (Body)

ईश्वर-स्तुति-प्रार्थनोपासना मन्त्राः

नीचे लिखे मन्त्रों का पाठ अर्थ-सहित श्रद्धा और भक्ति से करें। संस्कारों, विशेष यज्ञों, साप्ताहिक सत्संगों पारिवारिक सत्संगों में इन मन्त्रों का पाठ एक विद्वान् अथवा योग्य सज्जन अर्थ-सहित स्थिरचित होकर

परमात्मा में ध्यान लगाकर करे और सब लोग उसमें ध्यान लगाकर सुनें एवं विचारें–

ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव।
यद् भद्रतन्न आसुव॥१॥ –यजु. 30.3

Om Vishwaani deva Savitarduritani Paraasuva yaadbhadrm tann As suva. (1)

हे सकल जगत् के उत्पत्तिकर्त्ता, समग्र ऐश्वर्ययुक्त शुद्धस्वरूप, सब सुखों के दाता परमेश्वर! आप कृपा करके हमारे समस्त दुर्गुण, दुर्व्यसन और दु:खों को दूर कर दीजिए और जो कल्याणकारक गुण, कर्म, स्वभाव और पदार्थ है, वह सब हमको प्राप्त कीजिए।

तू सर्वेश सकल सुखदाता, शुद्धस्वरूप विधाता है,
उसके कष्ट नष्ट हो जाते, शरण तेरी जो आता है।
सारे दुर्गुण दुर्व्यसनो से, हमको नाथ बचा लीजे,
मङ्गलमय! गुण-कर्म-पदारथ प्रेम-सिन्धु हमको दीजे॥

ओ३म् हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्। स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम॥२॥ –यजु. 13.4

Om hiranyagarbhah Samvartataagre Bhootasya jaatah, patret aseet, Sa daadhar prithreem dyaamutemaam kasmai devaaya havish Vidhem. (2)

जो प्रकाशस्वरूप और जिसने प्रकाश करनेहारे सूर्य, चन्द्रमादि पदार्थ उत्पन्न करके धारण किये हैं, जो उत्पन्न हुए सम्पूर्ण जगत् का प्रसिद्ध स्वामी एक ही चेतनस्वरूप था, जो सब जगत् के उत्पन्न होने से पूर्व वर्तमान था, वह इस भूमि और सूर्यादिक को धारण कर रहा है, हम लोग उस सुखस्वरूप शुद्ध परमात्मा के लिए ग्रहण करने योग्य योगाभ्यास और अति प्रेम से विशेष भक्ति किया करें।

तू ही स्वयं प्रकाश सुचेतन, सुखस्वरूप दुःखत्राता है,
सूर्य-चन्द्रलोकादि को, तू रचता और टिकाता है।
पहले था, अब भी तू ही है, घट-घट में व्यापक स्वामी,
योग, भक्ति, तप द्वारा तुझको, पावें हम अन्तर्यामी।।

ओ३म् य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः। यस्य छायाऽमृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम।।३।। —यजु. 25.13

Om ya aatmdaa baldaa yasya vishwa upaaste prashisham yashya devah. Yasyachhayaa amritan yasya mrityuh kasmai devaaya havishaa vidhema. (३)

जो आत्मज्ञान का दाता, शरीर, आत्मा और समाज के बल का देनेहारा, जिसकी सब विद्वान लोग उपासना करते हैं और जिसका प्रत्यक्ष सत्यस्वरूप शासन, न्याय, अर्थात् शिक्षा को मानते हैं, जिसका आश्रय ही मोक्ष-सुखदायक है, जिसका न मानना, अर्थात् भक्ति न करना ही मृत्यु आदि दुःख का हेतु है, हम लोग उस सुखस्वरूप सकल ज्ञान के देनेहारे परमात्मा की प्राप्ति के लिए आत्मा और अन्तःकरण से भक्ति, अर्थात् उसी की आज्ञापालन करने में तत्पर रहें।

तू ही आत्मज्ञान बलदाता! सुयश विज्ञजन गाते हैं
तेरी चरण-शरण में आकर, भवसागर तर जाते हैं।
तुझको ही जपना जीवन है, मरण तुझे बिसराने में,
मेरी सारी शक्ति लगे प्रभु, तुझसे लगन लगाने में।

ओ३म् यः प्राणतो निमिषतो महित्वैकऽइद्राजा जगतो बभूव। य ईशेऽअस्य द्विपदश्चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम।।४।। —यजु. 23.3

Om yah praanto nimishato mahitvaik indraaja jagato babhoova. Ya ishe asya dwipadash-chatushpadah kasmai devaaya havishaa vidhema.(४)

जो प्राणवाले और अप्राणिरूप जगत् का अपनी अन्नत महिमा से एक ही विराजमान राजा है, जो इस मनुष्यादि और गौ आदि प्राणियों के शरीर की रचना करता है, हम लोग उस सुखस्वरूप सकल ऐश्वर्य को देनेहारे परमात्मा के लिए अपनी सकल उत्तम सामग्री को उसकी आज्ञापालन में समर्पित करके विशेष भक्ति करें।

तूने अपनी अनुपम माया से जग-ज्योति जगाई है,
मनुज और पशुओं को रचकर, निज महिमा प्रगटाई है।
अपने हिय-सिंहासन पर श्रद्धा से तुझे बिठाते हैं,
भक्तिभाव से भेंटें लेकर शरण तुम्हारी आते हैं।

ओ३म् येन द्यौरुग्रा पृथिवी च दृढा येन स्वः स्तभितं येन नाकः। योऽअन्तरिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय हविषा विधेम॥५॥ —यजु. 32.6

Om yen dyaurugra prithivee ch dridhaa yen-swah stabhitam yennaakah yo antarikshe yo rajso vimaanah kasmai devaaya havishaa vidhema. (5)

जिस परमात्मा ने तीक्ष्ण स्वभाववाले सूर्य आदि और भूमि को धारणा किया, जिस जगदीश्वर ने सुख को धारण किया और जिस ईश्वर ने दुःखरहित मोक्ष को धारण किया है, जो आकाश में सब लोक-लोकान्तरों को विशेष मानयुक्त, अर्थात् जैसे आकाश में पक्षी उड़ते हैं, वैसे सब लोकों का निर्माण करता और भ्रमण कराता है, हम लोग उस सुखदायक कामना करने के योग्य परब्रह्म की प्राप्ति के लिए सब सामर्थ्य से विशेष भक्ति करें।

तारे, रवि-चन्द्रादिक रचकर निज प्रकाश चमकाया है,
धरणी को धारण कर तूने कौशल अलख लखाया है।
तू ही विश्व-विधाता, पोषक! तेरा ही हम ध्यान धरें।
शुद्ध भाव से भगवन् तेरे भजनामृत का पान करें।

ओ३म् प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परि ता बभूव। यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नोऽअस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम्॥६॥ —ऋ. 10.129.10

Om prajaapate na twadetaanayo Vishwaajaatani paritaa babhoova yatkaasmaste jahumastanno astu vayam syaam Patayo reyeenam. (६)

हे सब प्रजा के स्वामी परमात्मन्! आपसे भिन्न दूसरा कोई उन, इन सब उत्पन्न हुए जड़-चेतनादिकों को नहीं तिरस्कार करता है, अर्थात् आप सर्वोपरि हैं। जिस-जिस पदार्थ की कामननावाले होके हम लोग भक्ति करें, आपका आश्रय लेवें और वाञ्छा करें, उस-उसकी कामना हमारी सिद्ध होवे, जिससे हम लोग धनैश्वर्यों के स्वामी होवें।

तुझसे बड़ा न कोई जग में, सबमें तू ही समाया है।
जड़-चेतन सब तेरी रचना, तुझमें आश्रय पाया है।
हे सर्वोपरि विभो! विश्व का तूने साज सजाया है,
धन-दौलत भरपूर दीजिए, यही भक्त को भाया है।

ओ३म् स नो बन्धुर्जनिता स विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा। यत्र देवाऽअमृतमानशानास्तृतीये धामन्नध्यैरयन्त॥७॥ —यजु. 32.10

Om Sa no banhurjanitaa sa vidhaataa dhaamani veda bhuvanaani Vishwaa, yatra devaa amritamaana shaanastriteeyee dhaamanna-dhyairyanta. (७)

हे मनुष्यो! वह परमात्मा अपने लोगों का भ्राता के समान सुखदायक, सकल जगत् का उत्पादक, वह सब कामों का पूर्ण करनेहारा, सम्पूर्ण लोकमात्र और नाम-स्थान-जन्मों को जानता है और जिस सांसारिक सुख-दुःख से रहित नित्यानन्दयुक्त मोक्षस्वरूप धारण करनेहारे परमात्मा मे मोक्ष को प्राप्त होके विद्वान् लोग स्वेच्छापूर्वक विचरते हैं, वही परमात्मा अपना गुरु, आचार्य, राजा और न्यायाधीश है। अपने लोग मिलके सदा उसकी भक्ति किया करें।

तू गुरु है, प्रजेश भी तू है, पाप-पुण्य-फलदाता है,
तू ही सखा बन्धु मम तू ही, तुझसे ही सब नाता है।
भक्तों को इस भव-बन्धन से तू ही मुक्त कराता है,
तू है अज, अद्वैत महाप्रभु! सर्वकाल का ज्ञाता है।

ओ३म् अग्ने नय सुपथा रायेऽअस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्। युयोध्यस्माज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठान्ते नमऽउक्तिं विधेम॥८॥ —यजु. 40.16

Om agne naya Supathaa raaye asmaan Vishwaani deva vayunaani vidwaan, yuyodhyasmaj-juhraanameno bhooyisthaam te nama uktini Vidhema. (8)

हे स्वप्रकाश, ज्ञानस्वरूप, सब जगत् के प्रकाश करनेहारे सकल सुखदाता परमेश्वर् आप जिससे सम्पूर्ण विद्यायुक्त हैं, कृपा करके हम लोगों को विज्ञान वा राज्यादि ऐश्वर्य की प्राप्ति के लिए अच्छे, धर्मयुक्त, आप्त लोगों के मार्ग से सम्पूर्ण प्रज्ञान और उत्तम कर्म प्राप्त कराइए और हमसे कुटिलतायुक्त पापरूप कर्म को दूर कीजिए। इस कारण हम लोग आपकी बहुत प्रकार की स्तुतिरूप नम्रतापूर्वक प्रशंसा सदा किया करें और सर्वदा आनन्द में रहें।

तू है स्वयं प्रकाश हे प्रभो! सबका सिरजनहार तुही,
रसना निशदिन रटे तुम्हीं को! मन में बसना सदा तुही।
कुटिल पाप से हमें बचाते रहना हरदम दयानिधान!
अपने भक्त जनों को भगवन्! दीजे यही विशद वरदान।

हवन–मन्त्र
Hawan-Mantra

ओ३म् भूर्भुवः स्वः।

Om Bhur Bhuvah Swah.

इस मन्त्र को उच्चारण करके दीपक जलाकर पात्र में रखे हुए कपूर को प्रज्ज्वलित करें।

(Agter Chanting this Mantra fire the champhar with Deepak.)

ओ३म् भूर्भुवः स्वर्द्यौरिव भूम्ना पृथिवीव वरिम्णा। तस्यास्ते पृथिवि देवयजनि पृष्ठेऽग्निमन्नादमन्नाद्यायादधे॥१॥

(इससे अग्नि प्रज्ज्वलित करें)

Om Bhur-Bhuvah Svadyauriva Bhumna Prithviva Varimna Tasyaste. Prithive Devayajani Pristhe gnimannadamannadaya-yadadhe. (Burn the fire)

हे परमात्मन्, आप सत्, चित्त और आनन्दरूप हैं। हे पृथिवी, तुम द्युलोक की तरह महान् और भूमि के तुल्य विस्तृत हो। तुम्हारे ऊपर देवयज्ञ होते हैं। हे पृथिवी! हम अन्नसमृद्धि के लिए तुम्हारे ऊपर द्रव्य के भक्षक अग्नि को स्थापित करते हैं।

ओ३म् उदुबुध्यस्वाग्न प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्ते सꣳसृजेथामयंच। अस्मिन्त्सधस्थेऽअध्युत्तरस्मिन् विश्वे देवा यजमानश्च सीदत॥१२॥

Om Udhudhyasvangne Pratijagrihi Tvamish-thapurte Sa (gvam) srijethamayamcha. Asmin Sadhasthe Adyutharasmin Vishvedeva yajamane-shcha Sidata.

हे अग्नि, तुम प्रज्वलित और प्रदीप्त हो। मैं यजमान और तुम इष्टापूर्त (इष्ट यज्ञ, पूर्त-धार्मिक दानादि कर्म) को सिद्ध करें। सभी विद्वान् और यजमान इस यज्ञ में यथायोग्य अपने-अपने स्थान पर बैठें।

समिदाधान मन्त्र Samidadhan

ओ३म् अयन्त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्द्धस्व चेद्ध वर्धय चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा। इदमग्नये जातवेदसे-इदन्न मम॥१॥ (पहली समिधा)

Om Ayanta Idhama Atma jatavedastenedhyasva Cheddhavardhaya Chasman Prajaya Pashubhir-Brahmavar-chasenannadyena Samedhaya Svaha-Idamagnaye Jatavedse Idnna Mama. (five)

हे सर्वज्ञ एवं पूज्य अग्नि, यह काष्ठ-समिधा तुम्हारी आत्मा है। इस समिधा से तुम प्रज्वलित और प्रदीप्त होओ। हे तेजामेय देव, तुम हमें संतान, पशु, ब्रह्मवर्चस और अन्नसमृद्धि से समृद्ध करो, एतदर्थ हम आहुति देते हैं।-यह समिधा सर्वज्ञ अग्नि के लिए है, मेरे लिए नहीं।

ओ३म् समिधाग्निं दुवस्यत घृतैर्बोधयतातिथिम्। आस्मिन् हव्या जुहोतन स्वाहा। इदमग्नये-इदन्न मम॥१॥

Om Samidhagnim Duvasyata Ghritairbodha yatatithim. Asmin Havya Juhotana Savaha. Idamagnaye Idanna Mama.

अर्थ- समिधा से अग्नि को उद्‌बुद्ध करो और अतिथिरूप अग्नि को घी से प्रदीप्त करो। इस अग्नि में हव्य वस्तुओं को डालो, स्वाहा।-यह अग्नि के लिए है, मेरे लिए नहीं।

ओ३म् सुसमिद्धाय शोचिषे घृतं तीव्रं जुहोतन। अग्नये जातवेदसे स्वाहा। इदमग्नये जातवेदसे इदन्न मम।।२।। (दूसरी समिधा)

Om Susamiddhya Shochishe Ghritam Tivram Juhotana. Agnaye Jatavedase Svaha. Idamagnaye Jatavedase Idanna Mama. (Second)

अर्थ- प्रदीप्त और तेजोमय अग्नि में गर्म किया हुआ घी डालो। सर्वज्ञ अग्नि के लिए यह आहुति है।-यह समिधा सर्वज्ञ अग्नि के लिए है, मेरे लिए नहीं।

ओ३म् तन्त्वा समिद्भिरङ्गिरो घृतेन वर्द्धयामसि। बृहच्छोचा यविष्ठ्य स्वाहा। इदमग्नयेऽङ्गिरसे-इदन्न मम।।३।। (तीसरी समिधा)

Om Tantva Samidhbhirgiro ghritena Verdhayamasi Brithachhayavishthya Svaha. Idamgnaye Ngirsase Idanna Mama. (Third)

अर्थ-हे तेजोमय और अतिमुयुवा प्रदीप्त अग्नि! हम तुम्हें समिधाओं और घी से और अधिक प्रदीप्त करते हैं। एतदर्थ आहुति देते हैं।-यह प्रदीप्त अग्नि के लिए है, मेरे लिए नहीं।

घृताहुति (पांच बार)
Ghrittahuti

ओ३म् अयन्त इध्म आत्मा जावेदस्तेनेध्यस्व वर्धस्व चेद्ध वर्धय चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन

समेधय स्वाहा। इदमग्नये जातवेदसे इदन्न मम॥१॥

(इस मन्त्र को पाँच बार पढ़कर पाँच बार घृताहुति दें)

Om Ayanta Idhma Atma Jatavedastenedhyasva Vardhasva Cheddavardhaya Chasman Prajaya Pashubhir-Brahmavarchase nannadyena Samendhaya Svaha-Idamagnaye Jatavedase Idanna Mama. (five tiem)

जल प्रसेचन

Jal Prasechan

ओ३म् अदितेऽनुमन्यस्व। पूर्व दिशा में-(दक्षिण से उत्तर की ओर)

Om Aditei numanyasva. (East)

अर्थ-हे अविनाशी शक्ति, हमें इस कार्य के लिए अनुमति दो।

ओ३म् अनुमतेऽनुमन्यस्व। पश्चिम दिशा में-(दक्षिण से उत्तर की ओर)

Om Anumate numanyasva (West)

अर्थ-हे अनुमति देवी, हमें इस कार्य के लिए अनुमति दो।

ओ३म् सरस्वत्यनुमन्यस्व। उत्तर दिशा में-(दक्षिण से उत्तर की ओर)

Om Sarsvatyanumanyasva (North)

अर्थ-हे सरस्वती देवी, हमें इस कार्य के लिए अनुमति दो।

ओ३म् देव सवितः प्रसुव यज्ञं प्रसुव यज्ञपतिं भगाय। दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतन्नः पुनातु वाचस्पतिर्वाचं नः स्वदतु। (चारों ओर)

Om Deva Savitah Pravsuva Yajnam Prasuva Yajnapatim Bhagaya. Devyo Gandharvah Ketapuh Ketannah Punatu Vachaspativacham Nah Svadatu (all side)

अर्थ-हे संसार के प्रेरक ईश, तुम ऐश्वर्यप्राप्ति के लिए यज्ञ और यजमान को प्रेरित करो। तुम दिव्य गन्धर्व (पृथ्वी के धारक) और बुद्धि

के शोधक हो, हमारी बुद्धि को पवित्र करो। तुम वाणी के स्वामी हो, हमारी वाणी को मधुर बनाओ।

आघारावाज्याहुति मंत्र

Agharavajyahuti Mantra

ओ३म् अग्नये स्वाहा। इदमग्नये-इदन्न मम॥

उत्तर भाग में- (पश्चिम से पूर्व की ओर)

Om Agnaye Svaha. Idamanaye Idanna Mama (North)

अर्थ-यह अग्नि के लिए आहुति है।-यह अग्नि के लिए है, मेरे लिए नहीं।

ओ३म् सोमाय स्वाहा। इदं सोमाय इदन्न मम।

दक्षिण भाग में- (पश्चिम से पूर्व की ओर)

Om Somaya Svaha-Idam Somay Idanna Mama (South)

अर्थ-यह सोम के लिए आहुति है।-यह सोम के लिए है, मेरे लिए नहीं।

ओ३म् प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये इदं न मम।

मध्य भाग में- (पश्चिम से पूर्व की ओर)

Om Prajapataye Svaha. Idam Prajapataye Idanna Mama (Middle)

अर्थ-यह प्रजापति के लिए आहुति है।-यह प्रजापति के लिए है, मेरे लिए नहीं।

ओ३म् इन्द्राय स्वाहा। इदमिन्द्राय-इदन्न मम॥

मध्य भाग में-(पश्चिम से पूर्व की ओर)

Om Indraya Svaha-Idamindraya Idanna Mama. (Middle)

अर्थ-यह इन्द्र के लिए आहुति है।-यह इन्द्र के लिए है, मेरे लिए नहीं।

प्रातःकालीन मंत्र

Morning Mantras

ओ३म् सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा॥१॥

Om Suryo Jyoti Jyoti Suryah Svaha. (1)

अर्थ-सूर्य ज्योतिर्मय है, सूर्य ज्योतिर्मय है, तदर्थ स्वाहा।

ओ३म् सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा॥२॥

Om Surya Varcho Jyotiravarchah Swaha. (2)

अर्थ-सूर्य तेजोमय है, सूर्य तेजोमय है, तदर्थ स्वाहा।

ओ३म् ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा॥३॥

Om Jyoti Suryah Suryo Jyotih Swaha. (3)

अर्थ-सूर्य ज्योतिर्मय है, सूर्य ज्योतिर्मय है, तदर्थ स्वाहा।

ओ३म् सजूर्देवेन सवित्रा सजूरुषसेन्द्रवत्या। जुषाणः सूर्यो वेतु स्वाहा॥४॥

Om Sajurdevana Savitra Sajuuratreyendravatya Jushanah Suryo vetu Svaha. (4)

अर्थ-सूर्य कविता देव के साथ और तेजोमयी उषा के साथ इस यज्ञ में आवे और सुखानुभव करे, तदर्थ स्वाहा।

सायंकालीन मंत्र

Evening Mantras

ओ३म् अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा॥१॥

Om Agnirjoyotiriyotiagnih Svaha. (1)

अर्थ-अग्नि ज्योतिरूप हैरा, अग्नि ज्योतिरूप है, तदर्थ स्वाहा।

ओ३म् अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा॥२॥

Om Agnirvarcho jyotirvarchah Swah. (2)

अर्थ-अग्नि तेजोमय है, अग्नि तेजोमय है, तदर्थ स्वाहा।

ओ३म् अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा॥ (मौन आहुति)

Om Agnirjyotirjyotirgnih Svaha. (3)

अर्थ-अग्नि ज्योतिरूप है, अग्नि ज्योतिरूप है, तदर्थ स्वाहा।

ओ३म् सजूर्देवेन सवित्रा सजूरात्र्येन्द्रवत्या। जुषाणो अग्निर्वेतु स्वाहा॥४॥

Om Sajurvedna Svitra Sajuuratryendravatya Jushano Agnirvetu Svaha. (4)

अर्थ-अग्नि सविता देव के साथ और तेजोमयी रात्रि के साथ इस यज्ञ में आवे और सुखानुभव करे, तदर्थ स्वाहा।

सामान्य-यज्ञ

Daily Aahuti Mantras

ओ३म् भूरग्नये प्राणाय स्वाहा।। इदमग्नये प्राणाय-इदं न मम।।१।।

Om Bhurgnaye Pranay Swaha. Idam Gnaye Pranay Idanna Mama. (1)

अर्थ-परमात्मा सत्-रूप है। प्राणशक्ति रूप अग्नि के लिए यह आहुति है।-यह प्राणरूप अग्नि के लिए है, मेरे लिए नहीं।

ओ३म् भुवर्वायवेऽपानाय स्वाहा।। इदं वायवेऽपानाय-इदं न मम।।२।।

Om Bhuvarvayave-Panaya Svaha-Idam Vayavepanaya Idanna Mama. (2)

अर्थ-परमात्मा चित्-रूप है। अपानवायुरूप शोधक वायु के लिए यह आहुति है।-यह अपानरूप वायु के लिए है, मेरे लिए नहीं।

ओ३म् स्वरादित्याय व्यानाय स्वाहा।। इदमादित्याय व्यानाय-इदं न मम।।३।।

Om Swaradityay Vyanay Svaha. idam aaditya vyanay Idann Mama. (3)

अर्थ-परमात्मा आनन्दरूप है। व्यानवायुतुल्य व्यापक सूर्य के लिए यह आहुति है।-यह व्यानवायुरूप सूर्य के लिए है, मेरे लिए नहीं।

ओ३म् भूभुर्वः स्वरग्निवाय्वादित्येभ्यः प्राणापानव्यानेभ्यः स्वाहा।। इदमग्निवाय्वादित्येभ्यः प्राणापानव्यानेभ्यः-इदं न मम।।४।।

Om Bhurbhuvah Svaragni-vayvadityebhyah Pranapana-vayanebhyh Svaha-Idamagnivya-vadityebhhyah Pranapana-vyanehhyah Idanna Mama. (4)

अर्थ-परमात्मा सच्चिदानन्दरूप है। प्राण-अपान-व्यान के तुल्य अग्नि, वायु और आदित्य के लिए यह आहुति है। यह प्राण-अपान-व्यान तुल्य

अग्नि-वायु-आदित्य के लिए है, मेरे लिए नहीं।

ओ३म् आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरों स्वाहा॥५॥

Om Aapo jyotee Raso-mritam Brahm Bhurbhuvah Swarom Svaha. (5)

अर्थ-वह परमात्मा व्यापक, प्रकाशमान, आनन्दमय, अमर, सर्वव्यापक, सच्चिदानन्द और ओम्-रूप है, तदर्थ स्वाहा।

ओ३म् यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते। तया मामद्य मेधयाऽग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा॥६॥

Om yam Medham Devaganah Pitrashchopasate. Taya mamadya Medhayagne Medhavinam Kuru Svaha. (६)

अर्थ-हे परमात्मन्, देवता और पितृगण (विद्वज्जन) मेधाबुद्धि की कामना करते हैं। हे अग्नि, उस मेधाबुद्धि से मुझे मेधावी बनाइए, तदर्थ स्वाहा।

ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद् भद्रं तन्न आसुव स्वाहा॥७॥

Om Vishvani Deva Savitarduritani Parasuva. Yadbhadram tanna asuva Svaha. (7)

अर्थ-हे संसार के उत्पादक देव, आप हमारे सारे दुर्गुणों को दूर कीजिए और जो कल्याणकारी गुण हों, उन्हें हमें दीजिए।

ओ३म् अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुंनानि विद्वान्। युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम स्वाहा॥८॥

Om agne Naya Suptha Raye Asman Vishvani De Vayunani Vidvan. Yuyodhasmajjuhuran meno Bhhuyishthante uktim Vidhem Svaha. (8)

अर्थ-हे अग्निरूप देव परमात्मन्, आप हमारे कर्मों को जानते हो। हमें ऐश्वर्य के लिए सन्मार्ग से ले चलो। आप हमारे कुटिल पापों को दूर करो। हम आपको बहुत नमस्कार करते हैं।

व्याहृति मंत्र
Vyahriti Mantra

ओ३म् भूरग्नये स्वाहा।। इदमग्नये-इदन्न मम।

Om Bhurgnaye Svaha-Idamagnaye Idanna Mama.

अर्थ-हे सत्रूप ईश, यह अग्नि के लिए आहुति है।-यह अग्नि के लिए है, मेरे लिए नहीं।

ओ३म् भुवर्वायवे स्वाहा।। इदं वायवे-इदन्न मम।

Om Bhuvravayave Svaha-Idam Vayare-Idanna Mama.

अर्थ-हे चित्रूप ईश, यह वायु के लिए आहुति है।-यह वायु के लिए है, मेरे लिए नहीं।

ओ३म् स्वरादित्याय स्वाहा।। इदमादित्याय-इदन्न मम।।

Om Svaradityaya Svaha-Idamadityaya Idanna Mama.

अर्थ-हे आनन्दरूप ईश, यह सूर्य के लिए आहुति है।-यह सूर्य के लिए है, मेरे लिए नहीं।

ओ३म् भूर्भुवः स्वरग्निवाय्वादित्येभ्यः स्वाहा।। इदमग्निवाय्वादित्येभ्यः इदन्न मम।

Om Bhurbhuvah Svargni-Vayvadityebhyah Svaha. Idamagnayi Vayvadityebhyah Idanna Mama.

अर्थ-हे सच्चिदानन्दरूप ईश, यह अग्नि, वायु और सूर्य के लिए आहुति है।-यह अग्नि, वायु और सूर्य के लिए है, मेरे लिए नहीं।

स्विष्टकृत् आहुति मन्त्र
Swistakrit Abhuti

ओ३म् यदस्य कर्मणोऽत्यरीरिचं यद्वा न्यूनमिहाकरम्। अग्निष्टत् स्विष्टकृद्विद्यात् सर्वं स्विष्टं सुहुतं करोतु मे। अग्नये स्विष्टकृते सुहुतहुते सर्वप्रायश्चित्ताहुतीनां कामानां समर्द्धयित्रे सर्वान्नः कामान्त्समर्द्धय स्वाहा। इदमग्नये स्विष्टकृते-इदन्न मम। (केवल घृत या भात से ही आहुति दें।)

Om Yadasya Karmano Atyariricham yadwa Nyuunamihaakaram Agnishtat Swishtakridvidyaat Sarvam Swishtam Suhutam Karotu Me. Agnaye Swishta Krite Suhuta Hute Sarvva Praayashchittaahutiinaam Kaarmaanaam Samardhayitre Sarvaanah Kaamaantsmardhaya Swaha. Idam Agnaye Swistkritaye Idanna Mama. (Use Sweet Rice)

अर्थ-इसका अर्थ मुझे बुक नम्बर 2 पेज 48 में नहीं मिला।

मौन आहुति
Maun Abhuti

ओ३म् प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये-इदन्न मम।

Om Prjapatye svaha-Idam prajapatye Idanna Mama.

अर्थ-इसका अर्थ मुझे बुक नम्बर 2 पेज 48 में नहीं मिला।

पूर्णाहुति मंत्र
Purnahuti Mantra

ओ३म् पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदुच्यते। पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते।

OM PURNAMADH PURNAMIDAM PURNAT PURNAMUDUCYATE. PURNASYA PURNA MADAYA PURNAMEVAVASISYATE.

ओ३म् सर्वं वै पूर्णं स्वाहा (तीन बार)

Om Sarvam Vai Purna (gavn) Swaha. (Thrice)

यज्ञ में पूर्णाहुति तीन बार देने के पश्चात् यजमान खड़े होकर बड़ी श्रद्धा से शेष घी को हवन कुण्ड की जलती अग्नि में धारा बांधकर निम्नलिखित मन्त्र बोलकर डालें—

वसोः पवित्रमसि

ओ३म् वसो; पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्त्रधारम्। देवस्त्वा सविता पुनातु वसो पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः। —यजु. 1/3)

VASO PAVITRAMASI

OM VASOH PAVITRAMASI SATADHARAM VASOH, PAVITRAMASI SAHASRA DHARAM. DEVASTVA SAVITA PUNATU VASO, PAVITRENA SATADHARENA SUPVA KAMADHUKSAH. (Yajurveda 1/13)

आज्याहुति मंत्र

Aajyahuti Mantra

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। अग्न आयूंषि पवस आ सुवोर्जमिषं च नः। आरे बाधस्व दुच्छुनां स्वाहा। इदमग्नये पवमानाय-इदन्न मम॥१॥

Om Bhur Bhuvah Swah. Agn Aayunshi Pava Aa Suvorjimisham ch Nah. Aare Badhasv Duchchnam Swaha. Idam Agneye pavamany-Idanna Mama. (1)

अर्थ-हे सच्चिानन्दरूप ईश्वर, हे अग्निरूप ईश, तुम हमारे जीवन को पवित्र करते हो। तुम हमें शक्ति और अन्न दो। तुम हमारी दुर्भावनाओं को दूर करो। यह एक पवित्र करने वाले अग्नि के लिए है, मेरे लिए नहीं।

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। अग्निर्ऋषिः पवमानः पाञ्चजन्यः पुरोहितः। तमीमहे महागयं। स्वाहा। इदमग्नये पवमानाय इदन्न मम॥२॥

Om Bhur Bhuvah Swah. Agneerishih Pavamanh Panchjanya Purohitah. Temeemhai Mhagyam Swvaha. Idam Agneye Pvmaanaay-Idanna Mama. (2)

अर्थ-हे सच्चिदानन्दरूप ईश्वर, यह अग्नि क्रान्तदर्शी है, पवित्र है और पवित्र करने वाला है, समाज के पांचों वर्गो का हितकारी है और अग्रणी है। हम उस महायशस्वी अग्नि की प्रार्थना करते है, तदर्थ स्वाहा। -यह पवित्र करने वाले अग्नि के लिए है, मेरे लिए नहीं।

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। अग्ने पवस्व स्वपा अस्मे वर्चः सुवीर्यम्। दधद्रयिं मयि पोषं स्वाहा। इदमग्नये पवमानाय-इदन्न मम॥३॥

Om Bhur Bhuvah Swah. Agne Pavasv Svapha Asmai Vrcha Suveryyam. Ddhedreiyam Myee Poshm-Idanagnye Pavmaanaaya swaha-Idanna Mama. (3)

अर्थ-हे सच्चिदानन्दरूप ईश्वर, हे अग्निरूप ईश, तुम सत्कर्म करने वाले हो, तुम हमें पवित्र करो। तुम हमें तेज और पराक्रम दो। तुम हमें पोषण के लिए ऐश्वर्य दो, तदर्थ स्वाहा। यह पवित्र करने अग्नि के लिए है, मेरे लिए नहीं।

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। प्रजापते नत्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परिता बभूव। यत्कामास्ते-जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणां स्वाहा। इदं प्रजापतये-इदन्न मम॥४॥

Om Bhur Bhuvh Swah. Prajaapate natwadetaanyanyo Vishvajaatani Paritaa Vabhoova. Yatkaamaaste Juhumastanno astu Vayam Syam Patayo Rayeenam Savah. Adam Prajaapate Idanna Mama. (4)

अर्थ-हे सच्चिदानन्दरूप ईश्वर, हे प्रजापति, तुम्हारे अतिरिक्त और कोई इस समस्त प्राणिवर्ग को अपने अधीन नहीं कर सकता है। जिस कामना से हम तुम्हारा आह्वान करते हैं, वह हमारी कामना पूर्ण हो। हम ऐश्वर्य के स्वामी बनें, तदर्थ स्वाहा। यह प्रजापति के लिए है, मेरे लिए नहीं।

अष्टाज्याहुति मंत्र

Aastajyahuti Mantra

ओ३म् त्वन्नों अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेळोऽवयासिसीष्ठाः। यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषांसि प्र मुमुग्ध्यस्मत् स्वाहा।। इदमग्नीवरुणाभ्याम्-इदन्न मम।।१।।

Om Tvnno Agne Vrunsy Vidvan Devasya Helovaya seseeshthah yajshtho vhnitmah Shoshuchano Vishvaa Dvashansee pra Moo Moogthysmt Swaha. Idamagnivarudhambhyaam- Idanna Mama. (1)

अर्थ-हे सर्वज्ञ अग्नि, तुम वरूण देव के क्रोध को हमसे दूर रखो। तुम अत्यन्त पूज्य, यज्ञिय हव्य को दूर ले जाने वाले और तेजोमय हो। तुम हमारे अन्दर से द्वेषभावना को दूर करो, एतदर्थ स्वाहा।-यह अग्नि और वरूण के लिए है, मेरे लिए नहीं।

ओ३म् स त्वन्नों अग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ। अव यक्ष्व नो वरुणं रराणो वीहि मृळीकं सुहवों न एधि स्वाहा।। इदमग्नीवरुणाभ्याम्-इदन्न मम।।२।।

Om S Tvnno Agneavmo Bhavotee Naidishttho Asya Ushso Vyooshtau. Av Ychkchv No Varunam Rarano Veihii Mrileekanm Suhvon Aidhi Savah. Imadagni Varudhdhyam Idanna Mama. (2)

अर्थ–हे अग्नि, तुम इस उषाकाल में हमारी रक्षा के द्वारा अतिप्रिय और अतिसमीपस्थ होओ। तुम यज्ञ के द्वारा प्रसन्न होकर वरूण के बन्धन से हमें मुक्त करो। तुम हमें सुख दो और हमारी प्रार्थना शीघ्र स्वीकार करो, तदर्थ स्वाहा। यह अग्नि और वरूण के लिए है, मेरे लिए नहीं।

ओ३म् इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृळय।
त्वामवस्युरा चके स्वाहा। इदं वरुणाय-इदन्न मम।।३।।

Om Im Mai Vrunn Shrudhi Hvmdhya ch Mritya. Tvaamsvyura chake Savah-Idanna Varunay-Idanna Mama. (3)

अर्थ–हे वरूण देव, तुम मेरी प्रार्थना सुनो और आज का दिन मेरे लिए सुखमय बनाओ। मैं तुम्हारे अनुग्रह के लिए तुम्हारी प्रार्थना करता हूँ, तदर्थ स्वाहा। यह वरूण देव के लिए है, मेरे लिए नहीं।

ओ३म् तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेळमानो वरुणेह बोध्युरुशंस मा न आयुः प्र मोषीः स्वाहा।। इदं वरुणाय इदन्न मम।।४।।

Om Tattvaa yaamee Brahmana Andmaanstdaashaaste yajmaano Havirbhih. Aheilmano Vrunah Bodyurushans Ma Na Aayuh Prmosheih svaha-Idanna Varunaay-Idanna Mama. (4)

अर्थ–हे वरूण देव, मैं मन्त्रों द्वारा स्तुति करता हुआ आपकी शरण में आता हूँ। मैं यजमान हवि डालता हुआ आपकी कृपा की आशा रखता हूँ। हे वरूण! तुम मेरी प्रार्थना की उपेक्षा न करते हुए उसे सुनो, तुम मेरी आयु कम न करना, तदर्थ स्वाहा।–यह वरूण के लिए है, मेरे लिए नहीं।

ओ३म् ये ते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञिया पाशा वितता महान्तः। तेभिर्नोऽद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा।। इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यः इदन्न मम।।५।।

Om Yetw Shtam Varunye Shahstrm yajjiyah Paasha vita Mhanth Tebhinrmoady Svitot Vishnuvrushve Munchantu Mrutah Svrkkrah Savah-Idam Varunaya Savitre Vishnavei vishveibhyo devebhyo Mrudhbhyah Swarkebhy-Idanna Mama.(5)

अर्थ-हे वरूण, तुम्हारे यज्ञ-संबंधी सैकड़ों और सहस्त्रों बड़े बन्धन चारों ओर फैले हुए हैं, उनसे सूर्य, विष्णु, विश्वदेव और स्तुत्य मरूद्गण हमें मुक्त करें, तदर्थ स्वाहा। यह वरूण, सूर्य, विष्णु, विश्वदेव और स्तुत्य मरूद्गण के लिए है, मेरे लिए नहीं।

ओ३म् अयाश्चाग्नेऽस्यनभिशस्तिपाश्च सत्यमित्त्वमयासि। अया नो यज्ञं वहास्यया नो धेहि भेषजं ॐ स्वाहा।। इदं अग्नये अयसे-इदन्न मम।।६।।

Om Ayashchaagne Asynbheishsitpashvh stymitvmyaasei. Aya Naygam Vahasyya No Dhehi Bhaishj (Gyam) Svaha. Idamagnaye Aysai-Idanna Mama. (6)

अर्थ-हे अग्नि, तुम लोहे के तुल्य तेजोमय हो। तुम हमें निन्दा से बचाने वाले हो। तुम वस्तुतः रक्षक हो। तुम हमारे यज्ञ को देवों तक ले जाने हो। तुम हमें नीरोगता और ओषधि प्रदान करो, तदर्थ स्वाहा। यह तेजोमय अग्नि के लिए है, मेरे लिए नहीं।

ओ३म् उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं विमध्यमं श्रथाय।

अथा वयमादित्य व्रते तवानागसोअदितये स्याम स्वाहा।। इदं वरुणायाऽऽदित्यायाऽदितये च-इदन्न मम।।७।।

Om Udutam Varun Pashmasmad vadmam Veemdhyamam shrthay. Ata Vyamadityaa vrate tavanaagsodityae syam svaha. Idam Varynya aa dityaya dityei-ch-Idanna Mama. (7)

अर्थ-हे वरूण, तुम अपने बड़े, मध्यम और छोटे बन्धनों को हमारे लिए ढीला कर दो। हे अदिति-पुत्र, हम सब बन्धनों से मुक्त होने के लिए तेरे शाश्वत नियमों का पालन करते हैं और निष्पाप होते हैं, तदर्थ स्वाहा। यह वरूण, आदित्य और अदिति के लिए है, मेरे लिए नहीं।

ओ३म् भवतन्नः समनसौ सचेतसावरेपसौ। मा यज्ञं ७ हिं सिष्टं मा यज्ञपतिं जातवेदसौ शिवौ भवतमद्य नः स्वाहा। इदं जातवेदोभ्याम्-इदन्न मम॥८॥

Om Bhvtnna Smnsou Schetsavrapsau Maayajyag (Gvam) He (Gvam) Sishtm Ma Jyavedsau Shivau Bhvtamadya Nah Savah. Idannam Jatvedobhyam-Idanna Mama (8)

अर्थ-हे द्युलोक और पृथिवी की अग्नियाँ, तुम और पृथिवी की अग्नियाँ, तुम दोनों हमारे लिए सहृदय, सांमजस्ययुक्त और पाप-रहित होओ। तुम दोनों हमारे यज्ञ और यजमान को हानि न पहुंचावो और हमारे लिए कल्याणकारी होओ, तदर्थ स्वाहा। यह दोनों अग्नियों के लिए है, मेरे लिए नहीं।

ओ३म् सर्वं वै पूर्णं स्वाहा॥ ३ बार

बलिवैश्वदेव यज्ञ विधि

Balivaiswdev - Vidhi

घृत मिश्रित भात या मिष्ठान से आहुति देवें।
Use only bliled sweet rice or sweets

१. ओं अग्नये स्वाहा	**Om Agnaye Swaha.**
२. ओं सोमाय स्वाहा	**Om Somay Swaha.**
३. ओं अग्निषोमाभ्यां स्वाहा	**Om Agni Shomabhyam Swaha.**
४. ओं विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा	**Om Viswebhyo devebhyah.**
५. ओं धन्वन्तरये स्वाहा	**Om dhanvantarye Swaha.**
६. ओं कुह्वै स्वाहा	**Om Kuhwai Swaha.**
७. ओ३म् अनुमत्यै स्वाहा	**Om Anumatai Swaha.**

८. ओं प्रजापतये स्वाहा **Om Prajapataye Swaha.**

९. ओं द्यावा पृथिवीभ्यां स्वाहा **Om dyawa Prithiweebhyam Swaha.**

१०. ओ३म् स्विष्टकृते स्वाहा **Om Swist Kritye Swaha.**

घृत लगाने का मन्त्र

ओं तेजोऽसि तेजो मयि धेहि।
ओं वीर्यमसि वीर्यं मयि धेहि।
ओं बलमसि बलं मयि धेहि।
ओम् ओजोऽसि ओजो मयि धेहि।
ओं मन्युरसि मन्युं मयि धेहि।
ओं सहोऽसि सहो मयि धेहि।। —यजुः 19/9
ओं तनूपा अग्नेऽसि तन्वं मे पाहि।
ओम् आयुर्दा अग्नेऽस्यायुर्मे देहि।
ओं वर्चोदा अग्नेऽसि वर्चो मे देहि।
ओम् अग्ने यन्मे तन्वाऽऊनं तन्म आपृण।।

—यजुः 3/17

हे तेजवन्त भगवन् मेरे में तेज भर दो।
ब्रह्माण्ड वीर्य मुझको वीर्यवान् कर दो।
बल–वीर्य के विधायक मुझको बली बनाओ।
हे ओज के अधीश्वर! निज ओज से सजाओ।
पुरुषत्व रोष पावन सहने की शक्ति दीजिए।
अपने सभी गुणों से परिपूर्ण नाथ! कीजिए।।

ओ३म् असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय। मृत्योर्मा अमृतं गमय।।

छल, कपट, कुमार्ग से दूर सन्मार्ग आप दिखा दीहिए।
अज्ञान अँधेरा दूर भगाकर इक ज्ञान की ज्योति जगा दीजिए।।
भय रोग अरू कष्ट निवार प्रभो! यह जीवन सुखी बना दीजिए।
कर जोड़ विनय यह हम करें, भवसागर पार लगा दीजिए।।

पक्ष–यज्ञ–विधि

दर्शेष्टि–अमावास्या यज्ञ

पौर्णमासी ओर अमावस्या के दिन नैत्यिक अग्निहोत्र की आहुति दिये पश्चात् स्थालीपाक=मोहनभोग, मीठा भात, खीर, खिचड़ी (बिना नमक), मोदक आदि बनाके निम्नलिखित मन्त्रों से विशेष आहुति करें–

ओम् अग्नये स्वाहा।।

मैं (**अग्नये**) अग्निके लिए (**स्वाहा**) यह आहुति देता हूँ।

ओम् इन्द्राग्नीभ्यां स्वाहा।।

मैं (**इन्द्राग्नीभ्यां**) विधुत और अग्नि के लिए (**स्वाहा**) यह आहुति देता हूँ।

ओं विष्णवे स्वाहा।।

मैं (**विष्णवे**) सूर्य के लिए (**स्वाहा**) यह आहुति देता हूँ।

पौर्णमासेष्टि–पौर्णमासी यज्ञ

पूर्णिमा के दिन अग्रिम मन्त्रों से विशेष आहुतियाँ दें–

ओम् अग्नये स्वाहा।।

इस मन्त्र का अर्थ पीछे अमावस्या यज्ञ में हो चुका है।

ओम् अग्नीषोमाभ्याम् स्वाहा।।

मैं (**अग्नीषोमाभ्याम्**) अग्नि और सोम=चन्द्रमा के लिए (**स्वाहा**) आहुति देता हूँ।

ओं विष्णवे स्वाहा।।

इस मन्त्र का अर्थ भी अमावस्या यज्ञ में हो चुका है।

“जिनके घर में अभाग्य से प्रतिदिन अग्निहोत्र न होता हो वे पक्षयाग अवश्य करें।”

—महर्षि दयानन्द सरसस्वती

व्रत धारण करने के मंत्र

ओं अग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तत्ते प्रब्रवीमि तच्छकेयम्। तेनर्ध्यां समिदमहमनृतात्सत्यमुपैमि स्वाहा। इदमग्नये इदन्न मम॥१॥

ओं वायो व्रतपते०............ (इससे आगे **“व्रतं चरिष्यामि”**—आदि पूरा पद पूर्ववत्) **स्वाहा। इदं वायवे इदन्न मम॥२॥ ओं सूर्य व्रतपते०......**(इससे आगे पूर्ववत्) स्वाहा। **इदं सूर्याय इदन्न मम॥३॥**

ओं चन्द्र व्रतपते०......... (इससे आगे पूर्ववत्) स्वाहा। **इदं चन्द्राय इदन्न मम॥४॥**

ओं व्रतानां व्रतपते०........ (इससे आगे पूर्ववत्) स्वाहा। **इदमिन्द्राय व्रतपतये इदन्न मम॥५॥**

यज्ञोपवीतमन्त्रः

ओम् यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यहत्सहजं पुरस्तात्। आयुष्यमग्रन्यं प्रतिमुञ्च शुभ्र यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः॥ आं यज्ञोपवीतं यज्ञस्य त्वा यज्ञोपवीतेनोपनह्यामि॥

भावार्थ 1–यज्ञादि शुभ कर्मों में अधिकारी बनने के लिए इस ब्रह्म सूत्रको जो विद्या प्राप्ति का सूचक है, तथा अत्यन्त पवित्र और हितकारी है उसे मैं धारण करता हूं। प्रभु कृपा से यह मुझे बल और तेज प्रदान करे।

2. हे ब्रह्म सूत्र! तू यज्ञोपवीत है, तुझे मैं यज्ञ कार्यों के लिए ग्रहण करता हूं तथा अपने धर्म की प्रतिज्ञा में बांधता हूं।

अथ स्वस्तिवाचनम्
Swastiwachanam

ओ३म् अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतारं रत्नधातमम्॥१॥

Om Agni meeley Purohitam yagyasya Devamritwijam Hotaarm Ratnadhaatamam. (1)

आदि अनादि अनन्त को मैं सादर शीश नवाता हूं।
जिसने यह ब्रह्माण्ड रचाया उसकी गाथा गाता हूं॥

मैं ज्ञानस्वरूप, पूर्व से ही जगत् को धारण करने वाले, यज्ञ के प्रकाशक, सदैव पूजनीय, सब अभीष्ट पदार्थों के दाता, सब सुन्दर पदार्थों के स्वामी प्रभु की स्तुति करता हूँ।

ओ३म् स नः पितेव सूनवे ऽग्ने सूपायनो भव। सचस्वा नः स्वस्तये॥२॥

Om Sa Nah Pitave Suunave Agne Supaayano Bhava Sachaswa Nah Swastaye. (2)

जैसे पुत्र को पाठ पढ़ाकर पिता प्रवीण बनाता है।
वैसे जगत्-जनयिता जग को ज्ञान ज्योति दिखलाता है।

हे ज्ञानस्वरूप परमेश्वर! आप, पुत्र के लिए पिता के समान, हमारे कल्याण के लिए आसानी से प्राप्त होने योग्य होइए, और अपने साथ लीजिए।

ओ३म् स्वस्ति नो मिमीतामश्विना भगः स्वस्ति देव्यदितिरनर्वणः। स्वस्ति पूषा असुरो दधातु नः स्वस्ति द्यावापृथिवी सुचेतुना॥३॥

Om Swasti No Mimitaamashwinaa Bhagah Swasti Devyaditiranarvanah. Swasti pusha Asuro Dadhuqatu Nah, Swasti Dhyaawaa Prithwi Suchetunaa. (3)

वसुधा-विद्युत-वायु-वारिधर विघ्न विनाशक हों सारे।
विद्वानों की वाणी हो कल्याणी भव निधि से तारे॥

हे ईश्वर! अध्यापक और उपदेशक, जल और वायु हमारे लिए कल्याणकारी हों। अखण्डित पृथिवी देवी हम पुरुषार्थी पुरुषों के लिए कल्याण देने वाली हो। पुष्टिकारक मेद्यादि हमारे लिए कल्याणकारी हों। अन्तरिक्ष और पृथिवी विज्ञान से प्रकाशित होकर हम पर कल्याण करें।

ओ३म् स्वस्तये वायुमुप ब्रवामहै सोमं स्वस्ति भुवनस्य यस्पतिः। बृहस्पतिं सर्वगणं स्वस्तये स्वस्तय आदित्यासो भवन्तु नः॥४॥

Om Swastye Vaayumupabravaamahai Somam Swasti Bhuvanasya Yaspatih. Brihaspatim Sarvganam swastaye Swastya Aadityaaso Bhavantu Nah. (4)

चन्द्रलोक में चारू-चन्द्रिका जैसी छटा दिखाती है।
ब्रह्मचर्य-मेधा जीवन में भी वह ज्योति जगाती है॥

हे परमेश्वर! शान्ति के लिए हम वायुविद्या का प्रचार और उपदेश करें। शान्तियुक्त ऐश्वर्य देने वाले चन्द्रमा की हम स्तुति करते हैं। यह चन्द्रमा औषधि आदि रस का उत्पादक होने के कारण संसार की रक्षा करने वाला है। कल्याणमय कर्मों के रक्षक और सबकी चिन्ता वाले हे प्रभु! हम आपका आश्रय लेते हैं। हम लोगों के बीच वेदविद्या को जानने वाले विद्वान् पैदा हों।

ओ३म् विश्वे देवा नो अद्या स्वस्तये वैश्वानरो वसुरग्निः स्वस्तये। देवा अवन्त्वृभवः स्वस्तये स्वस्ति नो रुद्रः पात्वंहसः॥५॥

Om Vishwe devaa No Adya Swastaye Vaishwaanaro Vasuragnih Swastaye. Devaa Avantwribhavah Swastaye Swasti No Rudrah Paatwanhasah. (5)

सन्त-समागम की सरिता में डुबकी नित्य लगाते हैं।
ज्ञान-यज्ञ के फल से मानव श्रेष्ठ मार्ग अपनाते हैं।

विद्धान् लोग हमें सुखदायक हों। सबका स्वामी वह प्रभु हमें सर्वदा

समृद्धि प्रदान करे। विद्वान् लोग अपनी प्रकाशमय बुद्धि और कलाओं से हमें दुर्गुणों से बचाएँ। वह प्रभु जो दुष्टों को दण्ड देने वाला है, हमें पापों से दूर रखे।

ओ३म् स्वस्ति मित्रावरुणा स्वस्ति पथ्ये रेवति।
स्वस्ति न इन्द्रश्चाग्निश्च स्वस्ति नो अदिते कृधि॥६॥

Om Swasti Mitravarunaa Swasti Pathye Rewati. Swasti Na Indrashchagnishch Swasti no Adite Kridi. (6)

वायु-विकार-रहित विद्युत भी वशीभूत हो जाता है।
भिन्न भिन्न भौतिक तत्वों से भूतल विश्व सजाता है॥

हे सर्वज्ञ परमेश्वर! हमारा कल्याण करो। वायु और विद्युत् हमारा कल्याण करें। शुभ धनादि सम्पन्न मार्ग हमारे लिए कल्याणकारी हों। प्राण और उदान वायु हमारे लिए कल्याणकारी हों।

ओ३म् स्वस्ति पन्थामनुचरेम सूर्याचन्द्रमसाविव।
पुनर्ददताघ्नता जानता सं गमेमहि॥७॥

Om Swasti Panthaamanucharem Suryaachandramasaviv Punardadhataaghantaa janataa Sangme mahu. (7)

सूर्य-चन्द्र के चरण-चिन्ह पर चल कर चक्र चलायेंगे।
सत्य-अहिंसा-भूषित हम कल्याण मार्ग पर जायेंगे॥

हे ईश्वर! जीवन मार्ग में कल्याण की भावना से हम विचरें, जैसे सूर्य और चन्द्रमा सबके कल्याण के लिए विचरण करते हैं। पुनः पुनः प्राणिमात्र के प्रति सहायक और किसी को दुःख न देते हुए तथा ज्ञान सम्पन्न मनुष्यों के साथ हम सब मिलकर चलें।

ओ३म् ये देवानां यज्ञिया यज्ञियानां मनोर्यजत्रा अमृता ऋतज्ञाः। ते नो रासन्तामुरुगायमद्य यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥८॥

Om ye Devaanam yajiyaa yajyaanaam manoryajatraa Amritaa Ritajiah. Te No Raasantaamurugaayamadya yuuyam Paata Swastibhih Sadda Nah. (8)

महाप्रज्ञ मुद–मंगल–मूलक मोक्ष मार्ग बतलाते हैं।
जन–जीवन में ज्योति जगाकर, सत्य नाम जपवाते हैं॥

जो यज्ञ के अधिकारी और विद्वानों में भी पूजनीय हैं, मननशील पुरुषों के साथ संगति करने वाले, जीवन्मुक्त और सत्य–ज्ञानी हैं, वे हमें अत्यन्त कीर्तिमयी विद्या प्रदान करें। आप सब विद्वान् कल्याणकारी पदार्थों से सब काल में हमारी रक्षा किया करें।

ओ३म् येभ्यो माता मधुमत्पिन्वते पयः पीयूषं द्यौरदितिरद्रिबर्हाः।
उक्थशुष्मान् वृषभरान्त्स्वप्नसस्ताँ आदित्याँ अनुमदा स्वस्तये॥९॥

Om ye Bhyo Maataa Madhumate Pinvate Payah Piyuusham Dhyauraditradravarhaa. Ukthshushmaan Vris bharaant Swapansastaam Adityaam Anumadaa Swastaye. (9)

ऋतु अनुकूल वृष्टि से धरती की कलियां खिल जाती हैं।
सुजलां सुफलां मातृ, भू मधुमय क्षीर पिलाती हैं।

जिन आदित्य ब्रह्मचारियों के लिए सबका निर्माण करने वाली पृथिवी माधुर्य युक्त दुग्धादि पदार्थ देती है और अखण्डनीय मेघों से व्याप्त अन्तरिक्ष लोक सुन्दर जल आदि देता है, उन अत्यन्त बल वाले और शुभ कर्मों द्वारा वृष्टि का आह्वान करने वाले आदित्य ब्रह्मचारियों को कल्याण के लिए प्राप्त करें।

ओ३म् नृचक्षसो अनिमिषन्तो अर्हणा बृहद्देवासो अमृतत्वमानशुः। ज्योतीरथा अहिमाया अनागसो दिवो वर्ष्माणं वसते स्वस्तये॥१०॥

Om Nrichkshaso Animishanto Arhanaa Brihadde vaaso Amritatwamaanshuh. Jyotirathaa Ahimayaa Anaagso Divo Varshmaanam Vasate Swastaye. (10)

जिसने अपनी आत्म–प्रेरणा से परहित अपनाया है।
प्रभु के दर्शन पाकर उसने जीवन धन्य बनाया है॥

क्रियाशील जगत् के द्रष्टा, आलस्यरहित, सबके लिए पूजनीय विद्वान् लोग जो महान् अमृत पद को प्राप्त हो चुके हैं, अर्थात् जीवनमुक्त हैं, सुन्दर प्रकाशमय शरीररूपी रथ से युक्त हैं, जिनकी बुद्धि को कोई तिरस्कृत नहीं कर सकता, ऐसे निष्पाप आदित्य ब्रह्मचारी, जो कि अन्तरिक्ष लोक में ऊँचे स्थान को ज्ञान द्वारा उपलब्ध करते हैं, वे हमारे कल्याण के लिए हों।

ओ३म् सम्राजो ये सुवृधो यज्ञमाययुरपरिह्वृता दधिरे दिवि क्षयम्। ताँ आ विवास नमसा सुवृक्तिभिर्महो आदित्याँ अदितिं स्वस्तये॥११॥

Om Samraajo Ye Suvridho Yajnamaayayur-aparithvritaa Dadhire divi Kshayam. Taam Aas Vivaas Namasaa Suviktbhimaho Aadityam Aditim Swastaye. (11)

ज्ञानी की कल्याणी वाणी कहती अमर कहानी है।
योग-याग यम-नियम-तपस्या की महिमा अब जानी है॥

अपने तेजों से अच्छी प्रकार विराजमान, ज्ञान आदि से वृद्ध जो विद्वान् लोग यज्ञ को प्राप्त होते हैं, और जो किसी से भी अपीडित श्रेष्ठ द्युलोकवत् प्रकाशवान बड़े-बड़े स्थानों में निवास करते हैं, उन श्रेष्ठ आदित्य ब्रह्मचारियों की, अखण्डनीय आत्मविद्या रूपी हव्यान्न स्तुतियों के साथ, कल्याण के लिए हम सेवा करें।

ओ३म् को वः स्तोमं राधति यं जुजोषथ विश्वे देवासो मनुषो यतिष्ठन। को वोऽध्वरं तुविजाता अरं करद्यो नः पर्षदत्यंहः स्वस्तये॥१२॥

Om Ko Vah Stomam Raadhati Yam Jujoshath Vishwe Devaaso Manusho yatishthan. Ko Voadhwaram Tuvijaataa Aaram Kardyo Nah Parshadatyam ha Swastaye. (12)

किसने रच कर ऋचा रूचि यह रहस्य रस प्रकटाया है।
किसने ऐसा आत्म-यज्ञ का अनुपम अनल जगाया है॥

ईश्वर का उपदेश है-हे समस्त विद्वानों! तुम जो स्तुति करते हो, उस वेदोक्त स्तुति को कौन बताता है? हे अनेक जन्म वाले मननशील विद्वानो!

तुम सबके बीच में कौन ऐसे यज्ञ को अलंकृत करता है जो हमारे मन से पाप को हटाकर कल्याण के लिए प्रेरित करता है?-इसका विचार करो।

ओ३म् येभ्यो होत्रां प्रथमामायेजे मनुः समिद्धाग्निर्मनसा सप्तहोतृभिः। त आदित्या अभयं शर्म यच्छत सुगा नः कर्त सुपथा स्वस्तये॥१३॥

Om Yebhyo Hotraam Pathmaamaayeje. Manuh Samiddagnirmansaa Saptahotribhi. Ta Aaditya Abhayam Sarm Yachhat Sugga Nah Karta Supathaa Swastaye. (13)

सदा सर्वदा, सज्जन सबको सात्विक सुपथ दिखाते हैं।
आत्मोत्सर्ग-अभय-अव्याहत के अभिप्राय बलाते हैं।

जिन व्यक्तियों के लिए मननशील विद्वान सात होताओं (सात ज्ञानेन्द्रियां 2 आँख, 2 कान, 2 नाक, 1 मुख) से मुख्य यज्ञ करता है, वे आदित्य ब्रह्मचारी भय रहित सुख को प्राप्त हों और वे हमारे कल्याण के लिए शोभन वैदिक मार्गो को समुचित ढंग से उपलब्ध कराएं।

ओ३म् य ईशिरे भुवनस्य प्रचेतसो विश्वस्य स्थातुर्जगतश्च मन्तवः। ते नः कृतादकृतादेनसस्पर्यद्या देवासः पिपृता स्वस्तये॥१४॥

Om Ya lishire Bhuvanasya prachetaso Vishwasya Staarturjagatashcha mantavah. Te Nah Kritaadakritaadensa Spryadya Devaasa Priprita Swastaye. (14)

मननशील ही मनीषियों ने मख महत्त्व को माना है।
अकृत-कृत अध से अलिप्त हो अखिल तत्त्व पहचाना है॥

स्थावर और जंगम सृष्टि के स्वामी ईश्वर को जानने वाले विद्वान अच्छे ज्ञान के साथ सबके अग्रगामी होते हैं। ऐसे श्रेष्ठ पुरुष हमें किये हुए और न किये हुए पापों से बचा कर हमारा कल्याण करें।

ओ३म् भरेष्विन्द्रं सुहवं हवामहेऽहोमुचं सुकृतं दैव्यं जनम्।

अग्निं मित्रं वरुणं सातये भगं द्यावापृथिवी मरुतः स्वस्तये॥१५॥

Om Bareshwindram Subhavam Hawaamahe Anhomucham Sukritam Daivyam Janam. Aginm Mitram Varunam Saataaye Bhagam Prithivi Maritha Swastye. (15)

जिसने पंचभूत प्रतिपादक प्रज्ञा प्रतिभा पाई है।
धरणी पर वह धीर धुरन्धर धर्म ध्वजा फहराई है॥

हे ईश्वर! पाप से छूटने में जिसका आह्वन प्रशंसायुक्त हो, ऐसे शक्तिशाली विद्वान् को हम अपने आंतरिक और बाह्य संग्रामों में अपनी रक्षा के लिए बुलाते हैं। अनन्त और महान् लाभ के लिए अग्नि, प्राण और जल तीनों सेवनीय विद्याओं और अन्तरिक्ष और पृथ्वी की विद्या तथा वायु विद्या का हम कल्याण के लिए सेवन करें।

ओ३म् सुत्रामाणं पृथिवीं द्यामनेहसं सुशर्माणमदितिं सुप्रणीतिम्। दैवीं नावं स्वरित्रा मनागसमस्रवन्तीमा रुहेमा स्वस्तये॥१६॥

Om Sutraamaanam Prithivim Dyaamanehasam Susharmaanamaditim Suprinitim. Daivim Naavam Swritraamanaagasamasravantima ruhemaa Swastaye. (16)

जगत-जलधि में जीवन बेड़ा यत्र तत्र टकाराता है।
नीति-निपुण नाविक ही उसको भव से पार लगाता है॥

इस संसाररूपी भवसागर से पार उतरने के लिए हम ऐसी ज्ञानरूपी दिव्य नौका पर चढ़ें जो रक्षा करने वाली, अनन्त सीमा वाली, छिद्र आदि से रहित, सुख देने वाली, अखण्डित, अच्छी प्रकार निर्मित, तथा सुन्दर साधन युक्त है। इस ज्ञान और भक्ति रूपी दृढ़ नौका पर चढ़कर हम उस दिव्य लोक को प्राप्त करें।

ओ३म् विश्वे यजत्रा अधिवोचतोतये त्रायध्वं नो दुरेवाया अभिह्रुतः। सत्यया वो देवहूत्या हुवेम शृण्वतो देवा अवसे स्वस्तये॥१७॥

Om Vishwe Yajantraa Adhiwochatotye Treaayadhwam No Durevaayaa Abhihrutah. Satyayaa Vo Dev Hutya Huvem Shrinvato Devaa Avase Swastye. (17)

विद्वानों की वाणी से प्राणी ज्ञानी बन जाते हैं।
बुद्धि-विवेक लगाकर वसुधा को भी स्वर्ग बनाते हैं॥

हे पूजनीय विद्वानों! हमारी रक्षा के लिए आप उपदेश किया करें और पीड़ा देने वाली दुर्गति से हमारी रक्षा करें। हे विद्वानों! आप हमारी स्तुति सुनें और इस सच्ची देवतुल्य स्तुति की सहायता से हम शत्रुओं से रक्षा प्राप्त करें। सुख के लिए हम आपका आह्वान करते रहें।

ओ३म् अपामीवामप विश्वामनाहुतिमपारातिं दुर्विदत्रामघायतः। आरे देवा द्वेषो अस्मद्युयोतनोरुणः शर्म यच्छता स्वस्तये॥१८॥

Om Apaami-vaamap Vishwamanaahutimapa&araatim Durvidtraamagha-ayata Are Devaa Dewsho-Asmadyuyotnorunah Sharm Yachhataa Swastaye. (18)

द्वेष-दम्भ-दुष्कर्म-दुष्टता दूषण दूर भगाना है।
संयम-शील स्नेह-शुचिता-समता-सद्भाव बढ़ाना है॥

हे विद्वानों! रोगादि को पृथक् करो। सब मनुष्यों की नास्तिक बुद्धि दूर करो। हम लोभ से रहित हों। पाप की इच्छा करने वाले शत्रु की दुष्ट भावना को दूर करो। द्वेष करने वाले हमसे दूर रहें। हमें बहुत सुख प्रदान करो।

ओ३म् अरिष्टः स मर्त्तो विश्व एधते प्र प्रजाभिर्जायते धर्मणस्परि। यमादित्यासो नयथा सुनीतिभिरति विश्वानि दुरिता स्वस्तये॥१९॥

Om Arishtah Sa Marto Vishwa Aidhate Pra Prajaabhitjaayate Dharmnaspari. Yamaadityaaso nyathaa. Sunitibhiroqti Vishwani Durita--Swastaye. (19)

अघ-अधर्म से मानव-आत्मा महा पतित हो जाती है।
परसेवा-परमार्थ-तपस्या, उनको शुद्ध बनाती है॥

श्रेष्ठ पुरुषों की उत्तम नीतियां पापों से हटा कर सन्मार्ग में प्रवृत्त

कराने वाली होती हैं। ऐसे सत्पुरुष कभी किसी विपरीत स्थिति से न घबराकर धर्मानुष्ठान में सदा रत रहते हैं। उनके पुत्र-पौत्रादिक अपने पूर्वजों की कीर्ति को बढ़ाने वाले होते हैं।

ओ३म् यं देवासोऽवथ वाजसातौ यं शूरसाता मरुतो हिते धने। प्रातर्यावाणं रथमिन्द्र सानसिमरिष्यन्तमा रुहेमा स्वस्तये॥२०॥

Om yam devaaso Awatha Vaajsaatou yam Shuursaataa Mruto Hitey Dhane. Prataryaavoanam Rathmindra Sansimrishyantama ruhemaa Swastaye. (20)

जीवन-रथ श्रुति-सम्मत पथ पर जो सारथी चलाते हैं।
जग की यात्रा पूरी कर वे अन्त अमरपुर जाते हैं॥

हे मितभाषी विद्वान् लोगो! अन्न के लाभ के लिए जिस रमणीय गमन साधन की रक्षा करते हो और रखे हुए धन के कारण संग्राम में जिस रथ की रक्षा करते हो इन्द्र को विजय और ऐश्वर्य प्राप्त कराने वाले, प्रातः काल से ही गमन करने वाले, किसी को पीड़ा न देने वाले उसी रथ पर हम कल्याण के लिए चढ़ें।

ओ३म् स्वस्ति नः पथ्यासु धन्वसु स्वस्त्यऽप्सु वृजने स्वर्वति। स्वस्ति नः पुत्रकृथेषु योनिषु स्वस्ति राये मरुतो दधातन॥२१॥

Om Swasti NahPathyaaso dhanvasu Swstyapsu Vrijane Swarvati. Swasti Nah Putrakritheshu Yonishu Swasti Raye maruto Dadhaatan. (21)

जननी देशभक्त धर्मीजन ज्ञानी-सुत जन्माती है।
जिनकी प्रतिभा शौर्य कर्म से जगती शोभा पाती है॥

मितभाषी विद्वान् लोगो! हमारे लिए जलसहित और जलरहित दोनों प्रकार के प्रदेश कल्याणकारी हों। जलों द्वारा हमारा कल्याण हो। सब आयुधों से युक्त शत्रुओं को पराजित करने वाली सेना कल्याण करने वाली हो। हमारी सन्तानों के उत्पत्ति स्थानों में कल्याण हो। गौ आदि धन के लिए कल्याण करो।

ओ३म् स्वस्तिरिद्धि प्रपथे श्रेष्ठा रेक्णस्वस्त्यभि या वाममेति। सा नों अमासो अरणे निपातु स्वावेशा भवतु देवगोपा॥२२॥

Om Swasti Riddhi Prapathe Shreshthaa Reknaswathyabhi Ya Vaamameti. Saa Na Amaa So Arne Nipaatu Swaveshaa Bhavatu Devagopaah. (22)

जननी-जन्म-भूमि पर जिसने जीवन-सुमन चढ़ाया है।
वारिधि-पार विश्व भर में भी जा झंडा फहराया है॥

इस पृथ्वी पर चलने वालों के लिए अच्छे मार्ग कल्याणकारी हों। यह पृथ्वी सुन्दर अन्नादि धन वाली है। सेवा के भाव से किये गये यज्ञ से यह सुलभ है। यह हमारे गृह की रक्षा करे। वनादि देशों में यह हमारी रक्षा करती है। विद्वानों से रक्षित यह पृथ्वी हमारे लिए अच्छे स्थन वाली हो।

परमात्मा से प्रार्थना है कि हमारे लिए सुन्दर मार्ग वाली, अन्नादि धन पैदा करने वाली, वनादि से सुशोभित और विद्वानों के लिए जिसमें अच्छे स्थान बनाये जायँ, ऐसी यह पृथ्वी हमें प्राप्त हो।

ओ३म् इषे त्वोर्ज्जे त्वा वायव स्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मणऽआप्यायध्वमघ्न्या ऽ इन्द्राय भागं प्रजावतीरनमीवा ऽ अयक्ष्मा मावस्तेन ईशत माघशंꣳसो ध्रुवा ऽ अस्मिन् गोपतौ स्यात बह्वीर्यजमानस्य पशून् पाहि॥२३॥

Om Ishetworje Twaa Wayawah Stha Devo Vah Svitaa Praaraparyatu Shreshth Tammaaya Karmana Aapyvadhvamaghnyaa. Indraaya Bhaagam Prajaavatiranameevaa Ayakshmaa Maa Vasten Ishata Maghshaanso Dhruvaa Asmin Gopatau Syaata Bhavirya jmaansya Pashuun paahi. (23)

धेनु अन्न बल-वैभव द्वारा सबको सुख पहुँचाता है।
उसी प्रजापति की पूजा कर प्राणी सद्गति पाता है॥

हे ईश्वर! अन्नादि इष्ट पदार्थ के लिए और बलादि के लिए तुम्हारा

आश्रय लेते हैं।

हे जीवो! तुम वायु सदृश पराक्रम वाले हो। सब जगत् का उत्पादक यज्ञरूप देव श्रेष्ठ कर्म के लिए तुम सबको सम्बद्ध करो। इस यज्ञ द्वारा अपने ऐश्वर्य के भाग को बढ़ाओ। यज्ञ सम्पादन के लिए न मारने योग्य बछड़ों सहित गौएं प्राप्त करो जो व्याधि-विशेषों से रहित और यक्ष्मा तपेदिक आदि बड़े रोगों से शून्य हों। तुम लोगों के बीच जो चोर आदि दुष्ट गुण युक्त हों, वह उन गौओं के मालिक न बनें और अन्य पापी भी उनपर अधिकार न करें। ऐसा यत्न करो जिससे अनेक चिरकाल पर्यन्त रहने वाली गौएं निर्दुष्ट गौ-रक्षक के पास बनी रहें। परमात्मा से प्रार्थना है कि वह यजमान के पशुओं की रक्षा करें।

ओ३म् आ नो भद्राः क्रतवोयन्तु विश्वतोदब्धासो अपरीतास उद्भिदः। देवा नो यथा सदमिद्वृधे असन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवे दिवे॥२४॥

Om Aa Na Bhadraah Kratvoa Yantu Vishwato Adabdaso Aparitaasa Udbhidah. Devaa No Yathaa Sadmid Vrihe Asanna praayuvo Rakshitaaro Dive Dive. (24)

विद्वानों की वाणी सबको अमृत पान कराती है।
मन-मन्दिर में ज्ञान-दीप से जीवन-ज्योति जगाती है॥

हे ईश्वर! हमको स्तुति के योग संकल्प प्राप्त हों। सब ओर से किसी से बाधा न प्राप्त करने वाले, सर्वोत्तम, दुःखनाशक विद्वान् लोग हमारी सभा में हों और सर्वदा हमारी वृद्धि के लिए ही हों। इन विद्वानों को प्रतिदिन प्रमादशून्य हमारी रक्षा करने वाले बनाओ।

ओ३म् देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतां देवानां रातिरभि नो निवर्त्तताम्। देवानां सख्यमुपसेदिमा वयं देवा न आयुः प्रतिरन्तु जीवसे॥२५॥

Om Dewanam Bhadra Sumtirrijuyotam Dewqnam Rati Rabhi No Nivarttaam. Dewanam Sakhyamupsaydima Vayam Deva Na Aayu Pratirantu Jewase. (25)

सदाचार-संगम-सत्याग्रह सर्वोपरि सहकारी है।
जीवन ज्योतिर्मय आत्मा है आदि-तत्व उपकारी है।।

हे भगवान्! सरल आचरण वाले विद्वानों की कल्याणकारी श्रेष्ठ बुद्धि हमें प्राप्त हो, और विद्वानों से विद्यादि पदार्थों का दान भाव हमें प्राप्त हो। हम श्रेष्ठ पुरुषों के मित्र भाव को प्राप्त हों। ये दिव्य पुरुष हमारी आयु को दीर्घकाल पर्यन्त जीने के लिए बनाएं।

ओ३म् तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियन्जिन्वमवसे हूमहे वयम्। पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये।।२६।।

Om Tamishaanam Jagtastashthushaspqatim Dhiyamjinvam Avase Humahe Vayam. Pushaa No yathaa Vedasaamasadviridhe Rakshita Paayuradahdah Swastye. (26)

अखिल चराचर के स्वामी का ज्ञानी ध्यान लगाते हैं।
निशि दिन पूजा-अर्चा करके श्रद्धा से गुण गाते हैं।।

ऐश्वर्य, चर-अचर जगत् के स्वामी और बुद्धि से सबको आनन्दित करने वाले परमात्मा का अपनी रक्षा के लिए हम आह्वान करते हैं। वह पुष्टिकर्त्ता घनों की वृद्धि करे। सामान्य और विशेष रूप से रक्षक और पालक परमात्मा हमें कलयाण प्रदान करे।

ओ३म् स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु।।२७।।

Om Swasti Na Indro Vrrddhshravaah Swasti Nah Puushaa Vishwavedaah. Swasti Nastaarkshyo Arishtnemih Swasti Na Brithaspatirdadhaatu. (27)

भवसागर में भ्रम की डुबकी खाकर फिर दुःख पाते हैं।
ओर छोर जब नहीं सझता प्रभु ही पार लगाते हैं।।

बहुत कीर्ति वाला, परमैश्वर्ययुक्त ईश्वर हमारे लिए कल्याण प्रदान करे। पुष्टि करने वाला सर्वज्ञाता ईश्वर हमारे लिए कल्याण की वर्षा करे। तीक्ष्ण तेजस्वी दुःखहर्ता ईश्वर हमारा कल्याण करे। महान् पदार्थो का

सवामी वह ईश्वर हमारे लिए कल्याणकारी हो।

ओ३म् भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवाः भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाँ सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः।।२८।।

Om Bhadram Karnebhih Shrinuyaama Devaa Bhadram Pashyema akshabhiryajatraah. Sthirairangaistush tuwaan sa stanubhirvyashemahi devahitam Yadaayuh. (28)

श्रुति श्रद्धा से श्रवण सृष्टि पर सम्यक् दृष्टि लगाते हैं।
चिरंजीवि हो कर भूतल पर अक्षय कीर्ति कमाते हैं।।

सत्संग के योग्य विद्वान् लोगो! हम कानों से अच्छा नहीं सुनें, नेत्रों से अच्छी वस्तुओं को देखें। प्रभु की स्तुति करने वाले हम लोग पुष्ट शरीरों से उस आयु को प्राप्त करें जो विद्वानों को कल्याण के लिए प्राप्त होती है।

ओ३म् अग्न आ याहि वीतये गृणानो हव्यदातये।
नि होता सत्सि बर्हिषि।।२९।।

Om Agna Aayaathi Veelaye Grinaaano Havyadaataye. Ni Hotaa Satri Barishi. (29)

अग्निरूप अखिलेश्वर ने अक्षय प्रकाश फैलाया है।
धर्मिष्ठों ने ध्यान योग से परम मोक्ष पद पाया है।।

हे प्रकाशस्वरूप परमात्मन्! कांति और विशिष्ट तेज से प्रशंसित हुए आप दिव्य पुरुषों को उत्तम पदार्थ देने को प्राप्त होइए। सब पदार्थों के ग्रहण करने वाले आपका यज्ञादि शुभ कार्य में सदा स्मरण करें। आप हमारे हृदयों में स्थित हों।

ओ३म् त्वमग्ने यज्ञानां होता विश्वेषांहितः।
देवेभिर्मानुषे जने।।३०।।

Om Twamagne Yajyanaam Hotaa Vishweshaam Hitah.

Devebhirmaanushe Jene. (30)

त्याग-भावना से प्रेरित हो जो जन यज्ञ रचाते हैं।
और साधना सेवा द्वारा नर तन सफल बनाते हैं।।

हे पूजनीय ईश्वर! आप छोटे-बड़े सब यज्ञों क उपदेष्टा हैं, आपको विद्वान् लोग और विचारशील पुरुष भक्तिभावना द्वारा हृदय में स्थित करते हैं।

ओ३म् ये त्रिषप्ताः परियन्ति विश्वा रुपाणि विभ्रतः।
वाचस्पतिर्बला तेषां तन्वो ऽ अद्य दधातु मे।।३१।।

Om Ye Trishpataah Pariyanti Vishwaa Ruupanni Vibhratah Vaachaspatirbala Teshaam Tanvo Adya Dhadhaatu me. (31)

निर्गुण सप्त-समूह इन्द्रियों पर अधिकार जमाते हैं।
वे महापुरुष जीवन-रण में विजयी वीर कहलाते हैं।।

तीन गुण-सत्त्वगुण, रजोगुण और तमोगुण-तथा सात ग्रह (अथवा 21 तत्त्व-अर्थात् 5 महाभूत, 5 ज्ञानेन्द्रिय, 5 प्राण, 5 कर्मेन्द्रिय, अन्तः करण जो सब चराचरात्मक वस्तुओं को पोषण करते हुए परिवर्तित होते रहते हैं, हे वेदवाणी के पति! आज मेरे शरीर में उन्हीं का बल प्रदान कर।

अथ शान्तिकरणम्

Shantikaranam

ओ३म् शं न इन्द्राग्नी भवतामवोभिः शं न इन्द्रावरुणा रातहव्या। शमिन्द्रासोमा सुविताय शं योः शं न इन्द्रापूषणा वाजसातौ।।१।।

Om Sham Na Indraagini Bhavtamvobhich Sham Na Indravaruna Rathavya. Shamindrasoma Suvitaya Sham yoh sham Na Indrapushna. Vajsatau (1)

विद्युत् वारि-बयार विषय-रत विज्ञानी कहलाते हैं।
आधि-व्याधि-भय-शोक निवारक वातावरण बनाते हैं।।

विद्युत् और अग्नि रक्षणादि द्वारा हमारे लिए सुखकारक हों। ग्रहण करने योग्य वस्तुएं देने वाली बिजली और जल हमारे लिए सुखकारक हों।

विद्युत् और औषधिगण ऐश्वर्य के लिए शान्ति और सांसारिक दृष्टि से हमारे लिए प्रसन्नतापूर्वक हों। विद्युत और वायु हमारे लिए युद्ध में व अन्न लाभ की दृष्टि से कल्याणकारक हों।

ओ३म् शं नो भगः शमु नः शंसो अस्तु शं नः पुरन्धिः शमु सन्तु रायः। शं नः सत्यस्य सुयमस्य शंसः शं नो अर्यमा पुरुजातो अस्तु॥२॥

Om sham No Bhagah shamu nah shnso Astu Sham Nah Purndhieh shamu Santu Rayh. Sham Nah Satysy Suymsy Shamsh Sham No Atyama Purujato Astu. (2)

ईश्वर की अर्चा में अनुदिन जो अनुराग बढ़ाते हैं।
वैभव न्याय सत्य से सृष्टि का वह साज सजाते हैं॥

हमारे लिए ऐश्वर्य सुखदायक हो और प्रशंसा शान्ति के लिए ही हो। हमारी तीव्र बुद्धि सुखकारक हो, और धन शान्ति के लिए हो। अच्छे नियम से युक्त सत्य का कथन हमको सुखकारक हो। हमारे लिए बहुत प्रसिद्ध न्यायाधीश सुख देने वाला हो।

ओ३म् शं नो धाता शमु धर्त्ता नो अस्तु शं न उरुची भवतु स्वधाभिः। शं रोदसी बृहती शं नो अद्रिः शं नो देवानां सुहवानि सन्तु॥३॥

Om sham No dhata shamu dhrta No Astu Sham Na Uruchie Bhavtu Svdhabhieh. Sham Rodsie brihti Sham No Adrieh Sham No devanam Suhvani Santu. (3)

भानु-भूमि-गिरि सभी दिशायें बादल विघ्न विनाशी हों।
प्रजा अन्न-धन से पूरित धर्मिष्ट शिष्ट गुणराशी हो॥

हमको पोषक प्रभु शान्तिकारक हो, सबका धारक प्रभु शान्ति के लिए हो, हमारे लिए पृथिवी अन्नादि पदार्थों को देती हुई कल्याणकारक हो। अन्तरिक्ष सहित महती पृथिवी व प्रकाश युक्त अन्तरिक्ष शान्ति देने वाले हों। मेघ हमारे लिए सुखकारक हों। विद्वानों के शोभन आह्वान सुखकारक हों।

ओ३म् शं नो अग्निर्ज्योतिरनीको अस्तु शं नो मित्रा

वरुणाव्शिवना शम्। शं नः सुकृतां सुकृतानि सन्तु शं न इषिरो अभिवातु वातः।।४।।

Om sham No Agneijyotirneeko Astu Sham No Mittra Varunha Vashvinaa Sham. Sham Nah Sukreettam Sukreettaani Sanatu Sham Na Ishiroo Abhivaatu Vaatah. (4)

पवन प्राणप्रद पराक्रम पुरुषार्थ पीयूष पिलाता है।
और प्रकाश तिमिर रजनी में प्राञ्जल पथ दिखलाता है।।

जिसका प्रकाश सेना के दिव्य तेज के समान है, ऐसा अग्नि सुखकारक हो। प्राण और उदान वायु हमें सुखकारण हों। उपदेश और अध्यापक सुख पहुंचाने वाले हों। धर्मात्माओं के श्रेष्ठ आचरण हमें सुख देने वाले हों। हमारे लिए गमनशील वायु सुख देता हुआ बहे।

ओ३म् शं नो द्यावापृथिवी पूर्वहूतौ शमन्तरिक्षं दृशये नो अस्तु। शं न ओषधीर्वनिनों भवन्तु शं नो रजसस्पतिरस्तु जिष्णुः।।५।।

Om Sham No Dyaavaaprithvee Purhuttau Shamantriksh dreeshyah No Astu. Sham Na Aaushdhirvnino Bhavantu Sham No Rajaspattirastu Jeeshnu. (5)

मख द्वारा ये मेघ-मही के गुण से लाभ उठाते हैं।
ओषधि-अन्न-फूल-फल से हम पूर्ण तृप्त हो जाते हैं।।

पूर्व पुरुषों की प्रशंसायुक्त उत्तम क्रियाओं द्वारा विद्युत और भूमि हमारे लिए शान्तिदायक हों। अन्तरिक्ष लोक ज्ञान सम्पत्ति के लिए हमारे लिए शान्तिदायक हो। ओषधियाँ और वृक्ष हमारे लिए सुखकारक हों। भावना और स्नेह का स्वामी हमारे लिए सुख देने वाला हो।

ओ३म् शं न इन्द्रो वसुभिर्देवो अस्तु शमादित्येभिर्वरुणः सुशंसः। शं नों रुद्रो रुद्रेभिर्जलाषः शं नस्त्वष्टा ग्नाभिरिह शृणोत।।६।।

Om Sham Na Indro Basubhairdevo Astu Shamaditya bhivarudah Sushnshah. Sham No Rudro Rudrebhirjlashih Shan-

Nastvashttaa Agnibhirhishree Dootuu. (6)

निर्मल नीर नितान्त निरापद रवि प्रकाश श्रमहारी है।
सन्तों के सत्संग-गंड में मंञ्जन मंगलकारी है॥

दिव्य गुण युक्त सूर्य धनादि पदार्थों के साथ हमारे लिए सुखकारक हो। सूर्य की किरणों द्वारा शोभन प्रशंसा वाला जलसमुदाय सुखकारक हो। दुष्टों को दण्ड देने वाला शान्तस्वरूप परमात्मा अपने गुणों के साथ हमारे लिए सुख देने वाला हो। विवेचक विद्वान् शुभ वाणियों से इस संसार में सुखमय उपदेश हमें सुनायें।

ओ३म् शं नः सोमो भवतु ब्रह्म शं नः शंनो ग्रावाणः शमु सन्तु यज्ञाः। शं नः स्वरूणां मितयो भवन्तु शं नः प्रस्वः शम्वस्तु वेदिः॥७॥

Om Sham Nah Somo Bhavtu Braham Sham Nah Sham No Gravadhah Shamu Santu yajahah. Shan Nah Svarunam Mitayou Bhavantu Sham Nah Prasva Sham Vastu Vedih. (7)

हरे-भरे खेतों से धरती की सुषमा बढ़ जाती है।
प्रजा वनस्पति ओषधि से सुख-शान्ति सम्पदा पाती है॥

हमारे लिए वनस्पतियां सुखकारक हों। हमारे लिए अन्नादि तत्त्व शान्तिदायक हों। शुभ कार्यों के साधन भूत जड़ पदार्थ हमें सुख देने वाले हों। सब प्रकार के यज्ञ शान्ति के लिए हों। यज्ञ-स्तम्भों के परिणाम हमें सुखदायक हों। हमे औषधियां सुख देने वाली हों। यज्ञ की वेदि कुण्डादिक शान्ति के लिए हों।

ओ३म् शं नः सूर्य उरुचक्षा उदेतु शं नश्चतस्रः प्रदिशो भवन्तु। शं नः पर्वता ध्रुवयो भवन्तु शं नः सिन्धवः शमु सन्त्वापः॥८॥

Om Sham Nah Surya Uruchacsha udaitu Sham Nshehtsttah praditshoo Bhavantu. Sham Nah Parvatta Dhruvyoo Bhavantu Sham Nah Sindhvah Shamu Santvaapah. (8)

सागर-सरिता-सलित-सूर्य सुख शान्तिरूप हो जाते हैं।
सूर्य देवता देव-यज्ञ से दया दृष्टि दिखलाते हैं।

बहुत पदार्थों के दर्शन कराने वाला सूर्य हमारे लिए सुखदायक उदय होवे। चारों दिशाएं हमारे लिए सुखदायक हों। दृढ़ पर्वत हमें सुखदायक हों। नदियां व समुद्र हमारे लिए सुख रूप हों और जल सुखदायक हों।

ओ३म् शं नो अदितिर्भवतु व्रतेभिः शं नो भवन्तु मरुतः स्वर्काः। शं नो विष्णुः शमु पूषा नो अस्तु शं नो भवित्रं शम्वस्तु वायुः॥९॥

Om Sham No Aditibhrevtuu Vraabhieeh Sham No Bhavantu Maruttah Sukkah Swarkah. Sham No Vishhnu Shamu pushaa No Astu Sham No Bhavitram Shamvastuu Vaayuh. (9)

जननी शिक्षा-सुधा पिलाती ज्ञानी तत्व सिखाते हैं।
सर्वेश्वर के शरणागत समदर्शी-सन्त कहाते हैं।

सत्कर्मों वाली विदुषी माताएँ हमारे लिए शान्तिप्रद हों। शोभन विचार युक्त मितभाषी विद्वान् हमारे लिए शान्तिप्रद हो। व्यापक ईश्वर शान्तिदायक हो। पुष्टिकारक ब्रह्मचर्यादि व्यवहार और भवितव्य हमें सुखकारक हो। पवन शान्तिदायक हो।

ओ३म् शं नो देवः सविता त्रायमाणः शं नो भवन्तूषसो विभातीः। शं नः पर्जन्यो भवतु प्रजाभ्यः शं नः क्षेत्रस्य पतिरस्तु शम्भुः॥१०॥

Om Sham Na Devah Savita ttrayamaanam Sham No Bhvanttuushsoo Veebhaattiih. Sham Nah Prajanyo Bhavantuu Prajabhyah sham Nah Khettarsya Patirasttu Shambhuu. (10)

जहाँ समय पर वर्षा होती वहाँ सुकाल सुहाता है।
भू-माता का कृषक समय पर अन्न राशि उपजाता है॥

प्रकाशमान सूर्य रक्षा करता हुआ हमारे लिए सुखकारक हो। विशेष दीप्तिवाली प्रभात बेलायें हमारे लिए सुखकारण हों। मेघ हमारे और संसार के लिए कल्याणकारी हों। क्षेत्र का स्वामी सबको सुख देने वाला और हमारे लिए शान्तिकारी हो।

ओ३म् शं नो देवा विश्वदेवा भवन्तु शं सरस्वती सह धीभिरस्तु। शमभिषाचः शमुरातिषाचः शं नो

दिव्याः पार्थिवाः शं नो अप्याः॥११॥

Om Sam No Deva Vishvdeva Bhavantu Sham Saraswati Sah Dhibhirstu. Shambhirhachh Sham Rattishachah Sham No Divyah Parthivah Sham No Apyah. (11)

भौतिक-गगन-तत्व भूतेश्वर के महत्व प्रकटाते हैं।
विज्ञानी नैसर्गिक सारे गूढ़ रहस्य बताते हैं॥

दिव्य गुणधारी सब देव-जन हमारे लिए सुखदायक हों। उत्तम बुद्धियों के साथ वेद-विद्या कल्याण देने वाली हो। आत्मदर्शी योगी हमारे लिए सुखदायक हों, और दान का सेवन करने वाले शान्तिदायक हों। आकाशीय पदार्थ, पृथ्वी के पदार्थ हमें सुखदायक हों, जलीय पदार्थ हमारे लिए कल्याणकारक हों।

ओ३म् शं नः सत्यस्य पतयो भवन्तु शं नो अर्वन्तः शमु सन्तु गावः। शं न ऋभवः सुकृतः सुहस्ताः शं नो भवन्तु पितरो हवेषु॥१२॥

Om Sham Nah Satysye Patyao Bhavantu Sham No Avantah Shamu Santu Gavah. Sham Na Ribhvah Sukrita Suhastah No Bhavantu Pitro Haveshu. (12)

गौ का पावन पथ परिपोषक तेज तुरंग सवारी हों।
सत्य-न्याय-प्रिय मार्ग-प्रदर्शक जनता के हितकारी हों॥

सत्य-भाषणादि व्यवहार के पालक हमारे लिए सुखकारी हों। उत्तम घोड़े और गौएं हमको सुखद व शान्तिप्रद हों। श्रेष्ठ बुद्धि वाले धर्मात्मा और अच्छे कामों में सहयोग का हाथ देने वाले हमारे लिए सुखद हों। हवनादि सत्कर्मों की पूर्ति के लिए माता-पिता आदि हमारे लिए सुखकारक हों।

ओ३म् शं नो अज एकपाद्देवो अस्तु शंनोऽहिर्बुध्न्यः शं समुद्रः। शं नो अपां नपात्पेरुरस्तु शं नः पृश्निर्भवतु देवगोपा॥१३॥

Om Sham No Aja Ekpatdevo Asttu Sham Noadirburdhny Om dhyouh Shantirantiksh (Gvang) Shanti Prthavi Shantiraapa Shantiroshdhayah Shanti Vanspatayah Sham Samundrh. Sham No

Apaam Npatperurastu Sham Nah Prishnirbhvantu Devgopa. (13)

वारिधि मेघ-मयूख-मही मनमोहक मर्म बताती है।
प्रणयन-पालन-प्रलयकार की प्रतिभा प्रकट दिखाती है॥

हमारे लिए अजन्मा, एकमात्र रक्षक, सुखदाता परमेश्वर सुखदायक हो। अन्तरिक्षस्थ मेघ हमें सुखदायक हों, समुद्र हमं सुख दे। जलों की नौका हमें सुख-पूर्वक पार लगाने वाली हो। देव जिसके रक्षक हैं ऐसा अन्तरिक्ष हमें सुखदायक हो।

ओ३म् इन्द्रो विश्वस्य राजति। शन्नों अस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे॥१४॥

Om Indro Vishvasya Raajati. Shanno Astu dvipade Sham Chatushpde. (14)

द्विपद चतुष्पद जीवों का, सेवा यज्ञ रचाते हैं।
परमेश्वर हो प्रसन्न उनका गृह-सौन्दर्य बढ़ाते हैं॥

हे जगदीश्वर! आप विद्युत के समान सारे संसार में प्रकाशमान हैं, आपकी कृपा से दो पैर वाले तथा चार पैर वाले उन सभी प्राणियों को सुख हो।

ओ३म् शन्नो वातः पवतांॐ शन्नस्तपतु सूर्य्यः। शंन्नः कनिक्रदद्देवः पर्जन्योऽअभि वर्षतु॥१५॥

Om Shano Vatah Pavtam (Gvang) Shannstaptu Suryah. Shanah Kanikrd Devah Prjanya Abhivarshttu. (15)

पावन पवन प्राणप्रद प्रियकर भानुरश्मि छिटकाई है।
ऋतु पर रिमझिम पानी बरसे सतत् शक्ति सुखदाई है॥

हे परमेश्वर! पवन हमारे लिए सुखकारी बहे। सूर्य हमारे लिए सुखकारी तपे। अत्यन्त शब्द करता हुआ उत्तम गुण युक्त विद्युत रूप अग्नि हमारे लिए कल्याणकारी हो और मेघ हमारे लिए भली प्रकार वर्षा करें।

ओ३म् अहानि शं भवन्तु नः शंᳬ रात्रीः प्रति धीयताम्। शं न इन्द्राग्नी भवतामवोभिः शन्न ऽ इन्द्रा वरुणा

रातहव्या। शन्न इन्द्रापूषणा वाजसातौ शमिन्द्रा सोमासुविताय शं ँ्योः॥१६॥

Om Ahani Sham Bhavantu Nah (sgvang) Rattrieh Pratidhiyttam, sham N Indraagni Bhavttamoobhih Sham N Indravrunah Ratahavyah. Sham N. Indrapushanah Vajsttau Shamindrasoma Suvitay Shanyoh. (16)

यज्ञ-योग से भौतिक देवों को अनवरत रिझाते हैं।
कर्मनिष्ठ हो भूतल पर वे समस्त फल को पाते हैं॥

ओ३म् शन्नो देवीरभिष्टय आपोऽभवन्तु पीतये। शंयोरभिस्रवन्तु नः॥१७॥

Om Shanno devirabhishtaya Apobhvantupitaye. Shanyorabhisravantunah. (17)

दयाभाव से द्रवित दयानिधि दुख दरिद्र दुराते हैं।
सलिल-सुधा बरसा कर मानव-जीवन उच्च बनाते हैं॥

हे जगदीश्वर! इष्ट सुख की सिद्धि के लिए पाने के अर्थ दिव्य उत्तम जल हमको सुखकारी होवें और हमारे लिए सुख की वृष्टि आप सब ओर से करें।

ओ३म् द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ँ्शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः।

वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व ँ्शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि॥१८॥

Om dhyoh Shantirantriksh (Gvang) Shanti Prthavi Shantiraaaapa Shantiroshdhayah Shanti Vanspatayah. Shantirvishve Deva. Shantibrahhama Shanti Sarv (Gvang) Shanti Shantirer shanti Sa ma Shantiredhi. (18)

ओ३म् तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतं शृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च

शरदः शतात्॥१९॥

Om Tachchakshur Devahitam Purastachchhuu-kramachcharat. Pashyema Shaqardah Shatam Jivema Shardah Shatam Shrinuyamasharadah Shatam Prabravama Shardah Shatamadinah Syama Shardah Shatam Bhuyashchrshadah Shatat. (19)

श्रवण-शक्ति बल मूलक वाणी, दिव्य दृष्टि नर पाते हैं।
शत वर्षों तक सवास्थ्य सुजीवन, जो प्रभु ध्यान लगाते हैं॥

हे सूर्यवत् प्रकाशक परमेश्वर! आप विद्वानों के हितकारी, शुद्ध नेत्र तुल्य सबके दिखाने वाले, अनादिकाल से अच्छी तरह सबके ज्ञाता हैं। उस आपको हम सौ वर्ष तक ज्ञान द्वारा देखें और आपकी कृपा से सौ वर्ष तक हम जिएँ, सौ वर्ष तक सच्छास्त्रों को सुनें, सौ वर्ष पढ़ावें व उपदेश करें और सौ वर्ष तक दीनता रहित हों और सौ वर्ष से अधिक भी देखें, जिएँ, सुनें और अदीन रहें।

ओ३म् यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदुसुप्तस्य तथैवैति। दूरङ्गमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥२०॥

Om yajagrto durmudhaiti daivam tadu suptsya Tathaivaiti Durangamm Jyotisham Jyotirekam Tanmai Manah Shisankalpamstu. (20)

जागृत और सुप्त जन का मन चंचल चपल दिखाता है।
ज्ञानी अपने थिर मानस से शिव संकल्प कराता है॥

जो दिव्यगुणों से युक्त, जागते हुए का, दूर अधिक जाता है और वह सोते हुए का उसी प्रकार जाता है। दूर जाने वाला और विषयों के प्रकाशक चक्षुरादि इन्द्रियों का जो प्रकाशक है, वह मेरा मन अच्छे संकल्प वाला होवे।

ओ३म् येन कर्माण्यपसो मनीषिणो यज्ञे कृण्वन्ति विदथेषु धीराः। यदपूर्वं यक्षमन्तः प्रजानां तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु॥२१॥

Om Yain Karmanypaso Manilshiino ygai Krivanti Vidthashu Dhiirah. Ydpooravvm ykshmantah Prajanam Tanmai Manah

Shivasankalpmasttu. (21)

जो मन मननशील हो जग में त्याग–भाव अपनाता है।
वही शुद्ध मन सत्य समन्वित शिव संकल्प कराता है॥

हे जगत्पते! जिस मन से सत्कर्मनिष्ठ, मन को दमन करने वाले, बुद्धिमान् लोग अग्निहोत्रादि कार्यों में और वैज्ञानिक युद्धादि व्यवहारों में इष्ट कर्मों को करते हैं, और जो अद्भुत प्राणिमात्र के भीतर मिला हुआ है, वह मेरा मन श्रेष्ठ संकल्प वाला हो।

ओ३म् यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च यज्ज्योतिरन्तरमृतं प्रजासु। यस्मान्न ऋते किञ्चन कर्म क्रियते तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु॥२२॥

Om Ytpragyanmut cheto dhrittshch yajyotirantrimritam prajqasu. Yasmann ritai Kinchqan Karm kriyatai Tanme Mana Shivsnkalp-masttu. (22)

जो मन स्मृति, ज्ञान, धृति, प्रतिभा, कर्मण्यता बढ़ाता है।
वही मुदित–मन मानव–तन से शिव संकल्प कराता है॥

हे प्रभो! जो बुद्धि का उत्पादक और स्मृति का साधन तथा धैर्यस्वरूप और मनुष्यों के भीतर नाशरहित प्रकाशस्वरूप है, जिसके बिना कोई भी काम नहीं किया जाता, वह मेरा मन शुद्ध विचार वाला हो।

ओ३म् येनेदं भूतं भुवनं भविष्यत्परिगृहीतममृतेन सर्वम्। येन यज्ञस्तायते सप्तहोता तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु॥२३॥

Om Yainaidambhutam bhuvanambhay eishtpigrhitammr itain Srvam. Yain yaghstaatai sapthota Tanmai manah Shivasankalpastu. (23)

जो त्रिकालदर्शी मन मख पर सब इन्द्रिया झुकाता है।
वह मन सत्यं–शिवं–सुन्दरम् शिव संकल्प कराता है॥

हे सर्वेश्वर! जिस नाशरहित मन से भूत, वर्तमान, भविष्यत् यह सब जाना जाता है और जिसके प्रभाव से सात कर्मेन्द्रियों द्वारा यज्ञ विस्तृत

किया जाात है, वह मेरा मन शुभ विचार वाला हो।

ओ३म् यस्मिन्नृचः साम यजूᳬंषि यस्मिन् प्रतिष्ठिता रथनाभाविवाराः। यस्मिँश्चित्तँ सर्वमोतं प्रजानां तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु॥२४॥

Om Yasimnnrch Saam yaahu (gvang) sii yasmin patishthita rathnabhavivarah yaiimsiichhtt (gvang) Sarvmotam prajanaarr Tanmai manah Shivsangkalpmastu. (24)

स्तुति–ज्ञान–कर्म–पथ पर जो जीवन–रथ ले जाता है।
वही धीर मन धर्म–अलंकृत शिव संकल्प कराता है॥

हे अखिलोत्पादक! जिस शुद्ध मन में ऋग्वेद और सामवेद तथा यजुर्वेद, रथ की नाभि में अरों की नाई स्थित हैं और जिसमें प्राणियों का समस्त ज्ञान सूत्र में मणियों के समान सम्बद्ध है, वह मेरा वेदादि सत्य शास्त्रों के प्रचार रूप संकल्प वाला हो।

ओ३म् सुषारथिरश्वानिव यन्मनुष्यान्नेनीयतेऽभीशुभिर्वाजिन इव। हृत्प्रतिष्ठं यदजिरं जविष्ठं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु॥२५॥

Om Susharthiirshvaaniiv yanmnushyannainiiyttai abhiishubhi i Vrarvajin iv. Hriprttiihthhm yadjiirm javishthm Tanmai Manah Shivsangkalpmastu. (25)

तन–तुरंग को बागडोर से चाहे जिधर घुमाता है।
वही वीर मन साहस–संकुल शिव संकल्प कराता है॥

अच्छा सारथी जिस प्रकार लगामों से वेगवाले घोड़ों को बलात् ले जाता है, उसी प्रकार जो मन मनुष्यों को इधर–उधर विचार–क्षेत्र में ले जाता है, जो हृदय में स्थित और कभी बूढ़ा न होने वाला और अत्यन्त वेगवान् है, वह मेरा मन कल्याणाकारी संकल्प वाला हो।

ओ३म् स नः पवस्व शं गवे शं जनाय शमर्वते। शं राजन्नोषधीभ्यः॥२६॥

Om S Nah pavsw Sham gavai Sham janaaya shamvrtai. Sham

rajnnoshdhibhyam. (26)

वैश्वानर मानव-मानव में धर्म-भाव फैलाता है।
औषध-अन्न-अश्व अरू गोरक्षा का भाव जगाता है।।

हे सर्वत्र प्रकाशमान परमात्मन! आप हमारे दूध देने वाले गवादि पशुओं के लिए सुख कारक हों। मनुष्य मात्र के लिए शान्ति देने वाले हों। सवारी के काम में आने वाले घोड़े आदि पशुओं के लिए सुखकारक हों। अन्न और औषधियां हमारे लिए शान्तिदायक हों।

ओ३म् अभयं नः करत्यन्तरिक्षमभयं द्यावापृथिवी उभे इमे। अभयं पश्चादभयं पुरस्तादुत्तरादधरादभयं नो अस्तु।।२७।।

Om Abhyam Nah Krtyntrikshmbhyam dyavapriihiivii uphai Imai. Abhyam pschchadbhyam pursttaadutraddhradhbhyam No Astu. (27)

व्योम-धरा-द्युलोक से भगवन जन को अभय बनाते हैं।
अभय चतुर्दिक से हो जाते और वीर गति पाते हैं।।

हे भगवन्! अन्तरिक्ष लोक हमारे लिए निर्भयता देने वाला हो। द्युलोक और पृथिवी लोक निर्भयता प्रदान करें। पीछे से भय न हो। आगे से भय न हो। ऊपर और नीचे से हमको भय न हो।

ओ३म् अभयं मित्रादभयममित्रादभयं ज्ञातादभयं परोक्षात्। अभयं नक्तमभयं दिवा नः सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु।।२८।।

Om Abhyam Mittradbhyammittradbhyam gyattadbhyam parokshaat. Abhyam ktmbhyam diiva Na sarva asha mam Mittaram Bhavantu. (28)

मित्र-अमित्र आस-अभिलाषा निशि दिन पूर्ण अभय कीजे।
अभयदान भगवान दया कर हम सब भक्तों को दीजे।।

हे जगत्पते! हमें मित्र से भय न हो, शत्रु से भय न हो। जाने हुए पदार्थ से भय न हो, न जाने हुए पदार्थ से भय न हो। हमें रात्रि में भय न हो, दिन में भय न हो। सब दिशाएँ मेरे लिए मित्र सदृश हों।

जन्म-दिवस विधि

यजमान स्नानादि से शुद्ध होकर स्वच्छ, सुन्दर वस्त्र पहन कर ईश्वर, स्तुति, प्रार्थनोपासना मन्त्रों सहित बृहद् यज्ञ (सामान्य प्रकरण) करके, तिथि, तिथिदेवता तथा नक्षत्रदेवता की आहुति देकर, निम्न मन्त्रों से आहुतियाँ दें।

ओ३म् उप प्रियं पनिप्नतं युवानमाहुतिवृधम्।
अगन्म बिभ्रतो नमो दीर्घमायुः कृणोतु मे।१। अ. 7-32-1

अर्थ कविता में

काबिले तारीफ प्यारे ईश्वर। तेरे गुण गाता रहूं मैं उम्र भर।। उम्र भी लम्बी करो परमात्मा। मैं सदा बन कर रहूं धर्मात्मा।। अन्न सादा हो जो मैं सेवन करूं। तेरी कृपा से सदा आगे बढ़ूं।। यज्ञ करके गीत गाऊं हर बरस। जन्म-दिन अपना मनाऊं हर बरस।।

ओ३म् आयुरस्मै धेहि जातवेदः प्रजां त्वष्टरधि निधेह्यस्मै।
रायस्पोषं सवितरासुवास्मै शतं जीवाति शरदस्तवायम्।२।

अ. 2-29-2

हे प्रभु तू सर्वशक्तिमान है। तेरा हर जां हर तरफ को ध्यान है।
जिन्दगी भी आप ने प्रदान की। उम्र लम्बी हो मेरे यजमान की।
खूब बलशाली हो और धनवान हो नेक दिल और नेक इन्सान हो।
यह दुआ है आप से परवरदिगार। सौ बरस जीता रहे प्यारा कुमार।।

ओ३म् शतं जीव शरदो वर्धमानः शतं हेमन्ताञ्छतमु वसन्तान्।
शतमिन्द्राग्नी सविता बृहस्पतिः शतायुषा हविषेमं पुनर्दुः।३।

ऋ. 10-161-4

हे मनुष्य! बढ़ता हुआ सौ वर्ष जी, स्वस्थ रह संसार में सहर्ष जी।
अपनी आंखों से बहारें देख सौ, और ईश्वर से लगा तू अपनी लौ।
चांद-तारों, सूर्य के प्रकाश से, बृहस्पति से, हवन से, आकाश सें।
ठीक ढंग से लाभ इनसे तू उठा। अपनी काया को तू रोगों से बचा।।

ओ३म् सं मा सिञ्चन्तु मरुतः सं पूषा सं बृहस्पतिः।
सं मायमग्निः सिञ्चन्तु प्रजया च धनेन च दीर्घमायुः
कृणोतु मे ।४। अ. -33-1

शुद्ध पवनें सूर्य मन और बृहस्पति। लाभदायक होवे, अग्नि यज्ञ की।।
धान्य से, प्रजा से, अच्छे ढंग सें सींचें जीवन को मेरे हर रंग सें
उम्र मेरी को बढ़ावें ये सभी। मेरे जीवन को बनावें ये सभी।।

ओ३म् तनूस्तन्वा मे सहे दतः सर्वमायुरशीय।
स्योनं मे सीद पुरुः पृणस्व पवमानः स्वर्गे।५। अ. 19-61-1

बलयुक्त सदा भगवन्! मेरा शरीर हों, सम्पुष्टि भोगदातृ, मेरी तकदीर हों।
सम्पूर्ण आयु का उपभोग मैं करूं। स्वच्छ, निर्मल मन और नीरोग मैं रहूं।।
पवित्र स्वरूप! पवित्रता प्रदान कर। उपकारों को तेरे भूलूं न, मैं उम्र भर।।

ओ३म् जीवा स्थ जीव्यासं सर्वमायुर्जीव्यासम्।६।
ओ३म् उपजीवा स्थोपजीव्यासम् सर्वमायुर्जीव्यासम्।७।
ओ३म् सञ्जीवा स्थ सं जीव्यासं सर्वमायुर्जीव्यासम्।८।
अ. 19-69=1 से 4

ओ३म् इन्द्र जीव सूर्य जीव देवा जीवा जीव्यासमहम्
सर्वमायुर्जीव्यासम्।१०। अ. 19-70/1

दो मुझे, ऐ आप्त जनों आशीर्वाद। दीर्घ आयु हो मेरी, न हो विषाद।।
बख्श वह जीवन, कि मैं ऊंचा रहूं। ऐसा जीवन विश्व में धारण करूं।।
ऐ मेरे जगदीश्वर ऐश्वर्यवान्। मुझको तुम ऐसा करो जीवन प्रदान।।
यह प्रकृति के नजारों से कहूं। आयुभर सम्पूर्ण जीवन से जीऊं।।

ओ३म् आयुषायुः कृतां जीवायुष्मान् जीव मा मृथाः।
प्राणेनात्मन्वतां जीव मा मृत्योरुद्गा वशम्। ११।
—अ. 19-27-8

शान से अपना मनाऊं जन्म दिन। ध्यान से अपना मनाऊं जन्म दिन।।
जो इरादे हों मेरे मजबूत हों। और अटल, चंगे, भले मजबूत हों।।
मौत गर बेवक्त आए मत डरूं। अपने ही पुरुषार्थ से जीता रहूं।।
नेक कामों में बिता उम्रे तमाम। विश्व में कर जाऊं अपना, नेक नाम।।

ओ३म् सत्यामाशिषं कृणुता वयोधै कीरिं चिद्धयवथ
स्वेभिरेवैः। पश्चा मृधो अप भवन्तु विश्वास्तद्रोदसी
श्रृणुतं विश्वमिन्वे ।१२। —अ.-20-1-11

आज विद्वानो! मुझे आशीष दो, मेरी झोली ज्ञान-पुष्पों से भरो।
भद्र पुरुषो! भक्तजन और देवियो, वेद-वचनों से भी तुम आशीष दो,
ताकि कोई दुःख न आये मेरे समीप, सौ बरस तक हो मुझे जीना नसीब।।

ओ३म् समस्त्वाग्न ऋतवो वर्धयन्तु संवत्सरा ऋषयो यानि सत्या। सं दिव्येन दीदिहि रोचनेन विश्वा आभाहि प्रदिशश्चतस्त्रः।१३। —अ. 2/6/1

चन्द्र, वर्ष, संवत्सर और मन्त्रद्रष्टा ऋषि,
वेद माता और ऋतुएं तुझको बढ़ावें ये सभी।
ईश के प्रताप से सदा बढ़े यजमान।
सूर्य सम प्रकाश से सर्वत्र हो उसका मान।।

वैवाहिक वर्षगांठ

जन्मदिन की भान्ति विवाह की वर्षगांठ मनाना अति महत्त्वपूर्ण एवं आवश्यक है। विवाह संस्कार के समय एक दूसरे को दिये गये आश्वासनों एवं प्रतिज्ञाओं को स्मरण करने तथा एक दूसरे के अनुकूल बनने-बनाने तथा सखा बनने-बनाने का बहुत ही सुन्दर अवसर है। किसी प्रकार के अन्तर अथवा मतभेद को जड़ से उखाड़ने और गृहस्थ को सुखमय बनाने में वर्षगांठ मनाना अत्यन्त लाभकारी सिद्ध होता है।

इस दिन पति-पत्नी स्नानादि के पश्चात् सुन्दर वस्त्र धारण करके यज्ञवेदि में पूर्वाभिमुख बैठें। आचमन, अङ्ग स्पर्श तथा नया यज्ञोपवीत धारण करके बड़ी श्रद्धापूर्वक ईश्वर-स्तुति-प्रार्थनोपासना का अर्थ सहित उच्चारण करें। स्वस्तिवाचन, शान्तिकरण के पाठ के बाद अग्न्याधान वा हवन की विशेष विधि करके पूर्णाहुति से पूर्व इन मन्त्रें का दोनों उच्चारण करके आहुति दें, अर्थ भी सुनें :-

१. ओ३म् समञ्जन्तु विश्वे देवाः समापो हृदयानि नौ। सं मातरिश्वा सं धाता समु देष्ट्री दधातु नौ स्वाहा।

—ऋ. 10-85-47

अर्थ-हम दोनों (पति-पत्नी) निश्चयपूर्वक तथा प्रसन्नतापूर्वक घोषणा करते हैं कि हम दोनों के हृदय जल के समान सदा शान्त और मिले हुए रहेंगे। जैसे प्राण वायु हमको प्रिय है, वैसे हम दोनों एक दूसरे से सदा प्रसन्न रहेंगे। जैसे धारण करने हारा परमात्मा सबमें मिला हुआ सब जगत् को

धारण करता है, वैसे हम दोनों एक दूसरे को धारण करते रहेंगे। जैसे उपदेश करने हारा श्रोताओं से प्रीति करता है वैसे हम दोनों का आत्मा एक-दूसरे के साथ दृढ़प्रेम को धारण करें। प्रभु ऐसी कृपा करें।

२. ओ३म् मम व्रते ते हृदयं दधामि मम चित्तमनु चित्तं ते अस्तु। मम वाचमेकमना जुषस्व प्रजापतिष्ट्वा नियुनक्तु मह्यम् स्वाहा। —पार. 18-8

अर्थ-तुम्हारे हृदय, आत्मा और अन्तःकरण को धारण करते हुए अपने चित्त के अनुकूल सदा रखते हुए मैं तुम्हारे हृदय, आत्मा और अन्तःकरण को धारण करता हूँ/करती हूँ। मेरे चित्त के अनुकूल तुम्हारा चित्त सदा बना रहे। मेरी वाणी को तुम एकाग्रचित्त होकर सदा सेवन किया करो। अर्थात् हम दोनों (पति-पत्नी) द्वारा की हुई प्रतिज्ञा के अनुकूल सदा वर्त्ता करें जिससे हम आनन्दित और कीर्तिमान्, पवित्रता और पत्नीव्रत होके सब प्रकार के व्यभिचार, अप्रिय भाषणादि को छोड़ करके परस्पर प्रीतियुक्त सदा बने रहें। प्रजापति परमात्मा ने हम दोनों को एक दूसरे के लिये ही बनाया है।

३. ओ३म् अन्नपाशेन मणिना प्राणसूत्रेण पृश्निना। बध्नामि सत्यग्रन्थिना मनश्च हृदयं च ते स्वाहा। —ब्रा. 1-3-8

अर्थ-जैसे अन्न के साथ प्राण, प्राण के साथ अन्न, अन्न और प्राण का अन्तरिक्ष के साथ सम्बन्ध है वैसे तुम्हारे हृदय, मन और चित्त आदि को सत्यता की गांठ से बांधना वा बांधती हूँ अर्थात् पति-पत्नी हम दोनों का प्रेम-बन्धन एक दूसरे के अनुकूल सदा दृढ़ बना रहे।

४. ओ३म् यदेतत् हृदयं तव तदस्तु हृदयं मम। यदिदं हृदयं मम तदस्तु हृदयं तव स्वाहा। —ब्रा. 1-3-9

अर्थ-यह जो तुम्हारा आत्मा वा अन्तःकरण है वह मेरे आत्मा वा अन्तःकरण के तुल्य सदा प्रिय बना रहे और मेरा जो यह आत्मा, प्राण और मन है सो तुम्हारे आत्मा के तुल्य सदा प्रिय बना रहे अर्थात् पति-पत्नी दोनों के हृदय एक दूसरे के लिये सदा प्रिय बने रहें।

५. ओ३म् कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छत ँ समाः। एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे स्वाहा।

—ऋग्वेद 10-85-47

अर्थ-इस संसार में यज्ञादि धर्मयुक्त वेदोक्त निष्काम श्रेष्ठकर्म को करते हुए हम 100 वर्ष की आयु को प्राप्त करें। परमात्मा की आज्ञानुसार शुद्ध आहार-विहार तथा आचार-विचार से शुभ कर्मों को करते हुए, अशुभ कर्मों को छोड़ते हुए ज्ञान-विज्ञान, धन-धान्य को प्राप्त करें।

६. ओ३म् पश्येम शरदः शतम्। जीवेम शरदः शतम्। बुध्येम शरदः शतम्। रोहेम शरदः शतम्। पूषेम शरदः शतम्। ओ३म् भवेम शरदः शतम्। ओ३म् भूयेम शरदः शतम्। ओ३म् भूयसीः शरदः शतात्। -अथर्व. 19-67/1-8

अर्थ-हे सर्वशक्तिमान्-प्राणदाता परमात्मन्! आपकी कृपा से हम सौ वर्षों तक देखते रहें, सौ वर्षों तक जीते रहें, सौ वर्षों तक सूझ-बूझ वाले बने रहें, सौ वर्षों तक उन्नति करते रहें, सौ वर्षों तक पुष्ट होते रहें, सौ वर्षों तक दृढ़ बने रहें, सौ वर्षों तक शुद्ध-पवित्र बने रहें। सर्वदा आपकी स्तुति-प्रार्थना-उपासना करते हुए शुद्ध आहार-विहार, आचार-विचार से हम सदा स्वस्थ एवं निरोग बने रहें ताकि नेत्र, मुख, नासिका, मन आदि हमारी सब इन्द्रियां सौ वर्षों से अधिक भी अच्छी प्रकार दृढ़ तथा सचेत रहें जिससे हम जीवनभर अपना कर्त्तव्य करते रहें।

मंगल यज्ञ

देश-विदेश तथा दूरस्थ स्थान जाते समय विदाई समारोह

विद्या, कारोबार, आजीविका आदि के लिये अपने नगर, ग्राम, गृह स्थानादि से देश-विदेश के दूरस्थ स्थान के लिये प्रस्थान करने से पूर्व **मंगल यज्ञ** का विशेष आयोजन बहुत ही उपयोगी सिद्ध होता है।

परमात्मदेव से बल, बुद्धि, विद्या, लम्बी आयु, धन-धान्यादि की याचना एवं उद्देश्य की सफलता की कामना तथा स्वजनों-मित्रों के आशीर्वचन एवं शुभ कामनाओं की प्राप्ति के लिये विदाई के आयोजन के शुभ अवसर पर स्तुति-प्रार्थनोपासना के मन्त्रों का श्रद्धापूर्वक विशेष यज्ञ करें।

ओ३म् ये पन्थानो बहवो देवयाना अन्तरा द्यावा पृथिवी संचरन्ति। ते मा जुषन्तां पयसा घृतेन यथा

क्रीत्वा धनमाहराणि स्वाहा। –अथर्व. 3-15-2

अर्थ–हे ऐश्वर्यशील जगदीश! जल–थल, आकाश के बहुत से मार्गों के यातायात साधन हमारे अनुकूल हों। हम आकाश, भूमि, समुद्र, पर्वतादि के मार्गों द्वारा देश–देशान्तर जाकर अनेक प्रकार से विद्या ज्ञान, धन प्राप्त कर, घर लौटें।

ओ३म् स्वस्ति पन्थामनुचरेम सूर्याचन्द्रमसाविव।
पुनर्ददताघ्नता जानता सं गमेमहि स्वाहा। –ऋग्वेद 5-51-15

ओ३म् कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविशेच्छत ँ समाः।
एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे स्वाहा।
–यजु. 30-3

ओ३म् तनूपाऽअग्नेऽसि तन्वं मे पाहि आयुर्दा अग्नेऽस्यायुर्मे देहि वर्च्चोदा अग्नेऽसि वर्च्चो मे देहि। अग्ने यन्मे तन्वा ऊनं तन्मऽआपृण स्वाहा।
–यजु. 3-17

ओ३म् त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् स्वाहा।
–ऋग्वेद 7-59-12

ओ३म् अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्। युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठान्ते नम उक्तिं विधेम स्वाहा। –यजुर्वेद 40-16

ओ३म् पश्येम शरदः शतम्। ओ३म् जीवेम शरदः शतम्। बुध्येम शरदः शतम्। ओ३म् रोहेम शरदः शतम्। पूषेम शरदः शतम्। भवेम शरदः शतम्। भूयेम शरदः शतम्। भूयसी शरदः शतात्। –अथर्व. 19/67/1-8

1. प्रभु की शरण (यज्ञ प्रार्थना)

यज्ञरूप प्रभो! हमारे भाव उज्ज्वल कीजिए।
छोड़ देवें छल-कपट को मानसिक बल दीजिए।।

वेद की बोलें ऋचायें सत्य को धारण करें।
हर्ष में हों मग्न सारे शोक-सागर से तरें।।
अश्वमेधादिक रचायें यज्ञ पर उपकार को।
धर्म-मर्यादा चलाकर लाभ दें संसार को।।
नित्य श्रद्धा भक्ति से यज्ञादि हम करते रहें।
रोग पीड़ित विश्व के सन्ताप सब हरते रहें।
रोग पीड़ित विश्व के सन्ताप सब हरते रहें।।
भावना मिट जाए मन से पाप-अत्याचार की।
कामनाएं पूर्ण होवें यज्ञ से नर-नार की।।
लाभकारी हो हवन हर प्राणधारी के लिए।
वायु जल सर्वत्र हों शुभ गन्ध को धारण किए।।
स्वार्थ-भाव मिटे हमारा प्रेम पथ विस्तार हो।
'इदन्न मम' का सार्थक प्रत्येक में व्यवहार हो।।
हाथ जोड़ झुकाय मस्तक वन्दना हम कर रहे।
नाथ 'करूणारूप' करूणा आपकी सब पर रहे।।

Pooja-neeya Prabho

Yagroop prabhoO! Hamarya bhava ujjavala keeji-ay.
Chho-dr day-vay chhala kapata ko, manasika bala deeji-ay.
Vay-da kee bolay rcha-ay, stya ko dharana ka-ray.
Harsha may ho magna sa-ray, shoka sagara say to-ray.
Asva-maydha-dika racha-ay, yagya para upakara ko.
Dhrma maryada chala-kara, labha day snsara ko.
Nitya sharaddha bhakti say, yagyadi hamakara-tay ra-hay.
Roga pee-drita vishva kay, santapa saba haratay ra-hay.
Bhavana mita j a-ay mana say papa atya-chara kee.
Kamana-yay poorna hovay yagya say nara-nari kee.
Labha-karee ho Havana hara jeeva-dharee kay li-ay.
Va-yu jala sarvatra ho shubha gangha ko dharana ki-ay.
Svartha-vhava mitay hamara prayma-patha vistara ho.
"Idanna mama" ka sarthaka pratyayka may vya-vahara ho.
Hatha jodra jhu-ka-yay mastaka vandana hama kara rahay.
Natha karunaroopa karuna apakee saba para rahay.
Pooja-neeyaprabho! Hamaray bhava ujjavala keeji-ay.
Chho-dra day-vay chhala kapata ko manasika bala deeji-ay.

2. यज्ञ महिमा

होता है सारे विश्व का कल्याण यज्ञ से
जल्दी प्रसन्न होते हैं, भगवान यज्ञ से।।
1-ऋषियों ने ऊँचा माना है यह स्थान यज्ञ का।
करते है दुनिया वाले सब सम्मान यज्ञ का।।
दर्जा है तीन लोक में-महान् यज्ञ का।
भगवान का है यज्ञ और भगवान यज्ञ का।
जाता है देव लोक में इन्सान यज्ञ से।। होता है....

2-करना हो यज्ञ प्रकट हो जाते हैं अग्नि देव।
डालो विहित पदार्थ शुद्ध खाते हैं अग्नि देव।
सबको प्रसाद यज्ञ का पहुचाते हैं अग्नि देव।
बादल बना के भूमि पर बरसाते हैं अग्नि देव।
बदले में एक के अनेक दे जाते हैं अग्नि देव।
पैदा अनाज होता है-भगवान यज्ञ से।।
होता है सार्थक वेद का विज्ञान यज्ञ से।। होता है......

3-शक्ति और तेज यश भरा इस शुद्ध नाम में।
साक्षी यही है विश्व के हर नेक काम में।।
पूजा है इसको श्री कृष्ण-भगवान राम ने।
होता है कन्यादान भी इसी के सामने।
मिलता है राज्य, कीर्ति, सन्तान यज्ञ से।। होता है

4-सुख शान्ति दायक मानते है सब मुनि इसे।
वशिष्ठ, विश्वामित्र और महर्षि दयानन्द इसे।
इसका पुजारी कोई पराजित नहीं होता।
भय यज्ञ कर्त्ता को कभी किञ्चित नहीं होता।
होती हैं सारी मुश्किलें आसान यज्ञ से। होता है......

5-चाहे अमीर है कोई चाहे गरीब है।
जो नित्य यज्ञ करता है वह खुश नसीब है।।
हम सबमें आये यज्ञ के अर्थो की भावना।
'जखमी' के सच्चे दिल से है यह श्रेष्ठ कामना।
होती है पूर्ण कामना-महान् यज्ञ से।। होता है.......

3. प्रार्थना

सदा फूलता फलता भगवान, ये याजक परिवार रहे
रहे प्यार जो किसी से इनका, सदा आप से प्यार रहे
मिथ्या कर अभिमान कभी, न जीवन का अपमान करे
देवजनों की सेवा करके, वेदामृत का पान करें
प्रभो! आप की आज्ञा पालन, करता हर नर नार रहे
मिले संपदा जो भी इनको, उसको माने आप की
घड़ी न आने पाये इन पर, कोई भी संताप की
यही कामना प्रभु आप से, कर हम बारम्बार रहे
दुनियादारी रहे चमकती, धर्म निभाने वाले हो।
सेवा के सांचे में सब ने, जीवन अपने ढाले हो।
बच्चा-बच्चा परिवार का, बनकर श्रवण कुमार रहे।
बनें रहें सन्तोषी सारे, जीवन के हर काल में।
हाल चाल हो ऐसा इनका, रहें मस्त हर हाल में।
ताकि देश बसाया इनका, सुखदायी संसार रहे।

4.भजन

आज मिल जब गीत गाओ उस प्रभु के धन्यवाद।
जिसका यश नित गाते हैं गन्र्धव मुनिजन धन्यवाद।।
मन्दिरों में कन्दरों में पर्वतों के शिखर पर।
पाते हैं आनन्द मिल गाते हैं स्वर भर धन्यवाद।।
कूप में तालाब में सागर की गहरी धार में।
प्रेम-रस में तृप्त हो करते हैं जलचर धन्यवाद।।
शादियों में कीर्तनों में यज्ञ और उत्सव के आदि।
मीठे स्वर में चाहिए करें नारि-नर सब धन्यवाद।।
गान कर 'अमीचन्द' भजनानन्द ईश्वर-स्तुति।
ध्यान धर सुनते हैं श्रोता कान धर-धर धन्यवाद।।

5.भजन

ओं है जीवन हमारा, ओं प्राणाधार है।
ओं है कर्त्ता विधाता ओं पालनहार है।।
ओं है दुःख का विनाशक, ओं सर्वानन्द है।

ओं है बल तेजधारी, ओं करूणाकन्द है।।
ओं सब का पूज्य है, हम ओं का पूजन करें।
ओं ही के ध्यान से, हम शुद्ध अपना मन करें।।
ओं के गुरु मन्त्र जपने से रहेगा शुद्ध मन।
बुद्धि दिन प्रतिदिन बढ़ेगी धर्म में होगी लग्न।।
ओम के जप से हमारा ज्ञान बढ़ता जायेगा।
अन्त में यह ओम हमको मुक्ति तक पहुँचाऐगा।

6. भजन

पितु मात सहायक स्वामी सखा, तुम ही एक नाथ हमारे हो।
जिनके कछु और आधार नहीं, तिन के तुम ही रखवारे हो।।
सब भाँति सदा सुखदायक हो, दुःख दुर्गुण नाशनहारे हो।
प्रतिपाल करो सिगरे जग को, अतिशय करूण उर धारे हो।।
भूलि हैं हम ही तुम को तुम तो, हमरी सुधि नाहि बिसारे हो।
उपकारन को कछु अन्त नहीं, छिन ही छिन जो विस्तारे हो।
महाराज महा महिमा तुम्हारी, समझे विरले बुधिवारे हो।
शुभ शान्ति निकेतन प्रेमनिधे, मन-मन्दिर के उजियारे हो।।
यहि जीवन के तुम जीवन हो, इन प्राणन के तुम प्यारे हो।
तुम सों प्रभु पाय 'प्रताप' हरि, केहि के अब और सहारे हो।।

7. भजन

शरण प्रभु की आओ रे, यही समय है प्यारे।
आओ प्रभु गुण गाओ रे, यही समय है प्यारे।।
उदय हुआ ओं नाम का भानु, आओ दर्शन पाओ रे।
अमृत झरना झरता इससे, पीके अमर हो जाओ रे।।
छल कपट और झूठ को त्यागो, सत्य में चित्त लगाओ रे।
हरि की भक्ति बिना नहीं मुक्ति, दृढ़ विश्वास जमाओ रे।।
कर लो नमा प्रभु का सुमिरन, अन्त को न पछताओ रे।
छोटे बड़े सब मिलकर खुशी से, गुण ईश्वर के गाओ रे।।

8.भजन

अब सौंप दिया इस जीवन का सब भार तुम्हारे हाथों में।
है जीत तुम्हारे हाथों में, और हार तुम्हारे हाथों में।।
मेरा निश्चय है एक यही, इक बार तुम्हें पा जाऊँ मैं।
अर्पण कर दूँ जगती भर का सब प्यार तुम्हारे हाथों में।।
या तो मैं जग से दूर रहूँ और जग में रहूँ तो ऐसे रहूँ।
इस पार तुम्हारे हाथों में उस पार तुम्हारे हाथों में।।
यदि मानुष ही मुझे जन्म मिले तो तव चरणों का पुजारी रहूँ।
मेरे पूजन की इक इक रग का हो तार तुम्हारे हाथों में।।
जब जब संसार का बन्दी बन दरबार तेरे में आऊँ मैं।
तब तब हो पापों का निर्णय सरकार तुम्हारे हाथों में।।
मुझ में तुझ में है भेद यही, मैं नर हूँ तू नारायण है।
मैं हूँ संसार के हाथों में संसार तुम्हारे हाथों में।।

9.भजन

तेरे दर को छोड़ कर, किस दर जाऊँ मैं।
सुनता मेरी कौन है, किसे सुनाऊं मैं।
जब से याद भुलाई तेरी, लाखों कष्ट उठाये है।
क्या जानूं इस जीवन अन्दर, कितने पाप कमाये है।
हूं शरमिन्दा आप से, क्या बतलाऊं मैं।
मेरे पाप-कर्म ही तुझसे, प्रीति न करने देते है।
कभी जो चाहूं मिलूं आप से, रोक मुझे ये लेते है।
कैसे स्वामी आपके, दर्शन पाऊँ मैं।
है तू नाथ! वरों का दाता, तुझसे सब वर पाते है।
ऋषि-मुनि और योगी सारे, तेरे ही गुण गाते है।
छींटा दे दो ज्ञान का, होश में आऊं मै।
जो बीती सो बीती लेकिन, बाकी उमर संभालूं मैं।
प्रेमपाश में बंधा आपके, गीत प्रेम के गा लूं मैं।
जीवन प्यारे देश का सफल बनाऊ मै।

10. सुखी बसे संसार सब

सुखी बसे संसार सब दुनिया रहे न कोय।
यह अभिलाषा हम सबकी, भगवन पूरी होय।।

विद्या बुद्धि, तेज-बल सबके भीतर होय।
दूध-पूत, धन-धान्य से वंचित रहे न कोय।।

आपकी भक्ति प्रेम से, मन होवे भरपूर।
राग-द्वेष से चित्त मेरा कोसों भागे दूर।।

मिले भरोसा नाम का, हमें सदा जगदीश।
आशा तेरे धाम की, बनी रहे मम ईश।।

पाप से हमें बचाइये, करके दया दयाल।
अपना भक्त बनाये के सबको करो निहाल।।

दिल में दया उदारताा, मन में प्रेम अपार।
धैर्य हृदय में वीरता, सबको दो करतार।।

नारायण तुम आप हो, पाप के मोचन हार।
क्षमा करो अपराध सब, कर दो भव से पार।।

हाथ जोड़कर विनती करू।
सुनिये कृपानिधान।।

साधु-संगत सुख दीजिए।
दया-नम्रता दान।।

10. SUKHI BASE SANSAR

Sukhi base sansar, sub dukhiya rahe na koy
Yeh abhilasha , ham sab ki, bhagwan puri hoy

Vidya buddhi tej bal, sab ke bhitar hoy
Dudh poot dhan dhanya Se, Vanchit rahe na koy

Apki bhakti prem se, man howe bharpur
Rag dwesh se chitta mera, koson bhage dur

Mile bharosa namka, hame sada jagdish
Asha tere dhamiki, bani rahe mum Ish

Pap se hame bachaiye, karke daya dayal
Apna bhakt banay ke, sabko karo nihal

Dilme daya udarata, man me prem apar
Dhairya hridya mein virata , sabko do kartar

Narayan tum ap ho, pap ke mochan har
Kshama karo aparadh sab, kar do Bhav se par

Haath Jod vinti Karu
Suniye Kriparidha,
Sadhu-Sangat Sukh dijeye
daya-veenarmta daan

11. आरती

ओं जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे।
आर्य जनों के संकट क्षण में दूर करें। ओं जय.... (1)

जो ध्यावे फल पावे, दुख बिन से मन का। स्वामी दुःख।
सुख-सम्पत्ति घर आवे, कष्ट मिटे तन का। ओं जय.... (2)

माता-पिता तुम मेरे, शरण गहूं मैं किसकी स्वामी शरण।
तुम बिन और न दूजा, आस करूं मैं जिसकी। ओं जय.... (3)

तुम पूरण परमात्मा, तुम अन्तर्यामी। सवामी तुम।
परम ब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी। ओं जय.... (4)

तुम करूणा के सागर, तुम पालनकर्ता, स्वामी तुम।
मैं सेवक तुम स्वामी, कृपा करो भर्ता। ओं जय.... (5)

तुम हो एक अगोचर, सब के प्राणपति, स्वामी सब।
किस विध मिलूं दयामय, ऐसी दो सुमति। ओं जय.... (6)

दीनबन्धु दुःखहर्ता, तुम रक्षक मेरे, स्वामी तुम।
करूणा-हस्त बढ़ाओ, शरण पड़ा मैं तेरे। ओं जय.... (7)

विषय-विकार मिटाओ, पाप हरो देवा। स्वामी पाप।
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, सन्तन की सेवा। ओं जय.... (8)

11. AARTI

Om jay jagdish hare, swami jay jagdish hare;
Arya Jano ke sankat, kshan mein dur kare, (Om jay)(1)

Jo dhyave phal pave, dukh bin se man ka, (Swami dukh)
Sukh sampati ghar ave, kasht mite tan ka (Om jay)(2)

Mat pita turn mere, sharan gahun kiski, (Swami sharan)
Turn bin our na duja, ass karun jis ki, (Om jay)(3)

Turn puran paramatma, tum antaryami (Swami turn)
Param brahma parameshwar, turn sab ke swami, (Om jay)(4)

Turn karma ke sagar, turn palan karta, (Swami turn)
Mein sevak turn swami, kripa karo bharta, (Om jay)(5)

Turn ho ek agochar, sub ke pran pati, (Swami sub ke)
Kis vidhi milun dayamay, aisi do sumati (Om jay)(6)

Din-bandhu dukh harta, turn rakshak mere, (Swami Turn)
Karuna hasta badhao, sharan pada mein tere, (Om jay)(7)

Vishay vikar mitao, pap haro deva (Swami pap)
Sharaddha bhakti badhao, santan ki seva, (Om jay).(8)

माता-पिता का ऋण

1. हम कभी माता-पिता का, ऋण चुका सकते नहीं
इनके तो अहसान हैं इतने, गिना सकते नहीं
ये कहाँ पूजा में शक्ति, ये कहाँ फल जाप का
हो तो हो इनकी कृपा से, खात्मा सन्ताप का
इनकी सेवा से मिले, धन ज्ञान बल लम्बी उमर
स्वर्ग से बढ़कर है जग में, आसरा माँ-बाप का
इनकी तुलना में कोई वस्तु, भी ला सकते नहीं
हम कभी माता-पिता का, ऋण चुका सकते नहीं

देख लें हम को दुःखी तो, भर लें अपने नैन ये
हक हमारे सुख का खातिर, तड़पते दिन रैन ये
भूख लगती प्यास ना, और नींद भी आती नहीं
कष्ट हो तन पे हमारे, हो उठें बेचैन ये
इनसे बढ़कर देवता भी, सुख दिला सकते नहीं।
हम कभी माता-पिता का, ऋण चुका सकते नहीं।

पढ़ लो वेद और शास्त्र का भी एक ये ही मर्म है
योग्यतम सन्तान का ये सबसे उत्तम कर्म है
जगत में जब तक जिये सेवा करे माँ-बाप की
इनके चरणों में ये तन-मन-धन लुटाना धर्म है
ये 'पथिक' वो सत्य है जिसको झुका सकते नहीं
हम कभी माता-पिता का ऋण चुका सकते नहीं।

प्रार्थना

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग भवेत।।
सबका भला करो भगवान, सब पर दया करो भगवान।
सब पर कृपा करो भगवान, सबका सब विधी हो कल्याण।
हे नाथ सब सुखी हों कोई न हो दुःखारी।
सब हो निरोग भगवन, धन्य धान्य के भंडारी।।
सब भद्र भाव देखें, सन्मार्ग के पथिक हों।
दुखिया ना कोई होंवे, सृष्टी में प्राणधारी।।
भगवान इस परिवार को, सुख शांति का वरदान दो।
ज्ञान की गंगा बहाकर, शुद्ध वैदिक ज्ञान दो।।
निरोग होकर सब जीयें, शत वर्ष आयुष्मान हो,
धन्य धान्य से पूरित सदा, यश युक्त कीर्तिमान हो।।
पुत्र-पौनादिक सभी, बलवान हो, बुद्धिमान हो,
धर्मात्मा और धनवान हो, भगवान इस परिवार को।।

।।आशीर्वाद।।

ओम् सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः। ओम सफलाः
सन्तु यजमानस्य कामाः। ओम् पूर्णा सन्तु यजमानस्य कामाः।
ओ३म् सौभाग्यमस्तु। ओ३म् शुभं भवतु।
ओम् स्वस्ति। ओम् स्वस्ति। ओम् स्वस्ति।

प्रार्थना

त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्व मम देव देव।।
त्वमेकं शरेण्यं त्वमेवं वरेण्यम्। त्वमेकं जगत्पालकं स्वप्रकाशम्।
त्वमेव जगत्कुतृपातृप्रहत्री। त्वमेकं परं निश्चलं निर्विकल्पम्।
नमस्ते सते ते जगतकारणाय। नमस्ते चिते सर्व लोकाश्रयाय।
नमोऽद्वैत तत्वाय मुक्तिप्रदाय। नमो ब्रह्मणे व्यापिने शाश्वताय।
नमस्ते निराकार निर्गुण निरूपम्। नमस्ते शिवम् नित्य सुन्दरम् स्वरूपम्।
नमस्ते अगोचर अगमओज दायक। नमस्ते निरंजन निगम नेतिनायक।
नमस्ते महेश्वर महत् मोक्षदाता। नमस्ते विभू विश्व व्यापक विधाता।
नमस्ते स्वभू सच्चिदानन्द स्वामी। नमस्ते नियन्ता प्रणाम नमामि।।

हे परमात्मन! आप ही हमारे माता-पिता हैं। आप ही हमारे भाई और मित्र हैं। विद्या और धन वैभव भी आप ही हैं। आप ही हमारे सर्वस्व और पूजनीय देव हैं।

Prayer

Tvameva mata ch a pita tvameva,Tvameva
bandhushcha sakha tvameva.Tvameva vidya
dravinam tvameva, Tvameva sarvam mama deva deva.
Twame-kam sharaynam twamekam varen-yam
Twame-kam Jagat Paalla-kam swa pra-kaa-sham
Twame-kam Jagat kartri paarti para-har-tri
Twame-kam param nish-cha-lam nir-vi-kalpam
Namaste-sate to-Jagat Kara Naaya
Namaste chete Sarva loka shra-yaaya.
Namo adwaita tattwaaya mukti-pra-daaya
Namo brahmane Vyaapine shaash-wa-taaya.
Namaste niraa kaar nirgun niroopam
Namaste shivam nitya sunder swaroopam
Namaste agochar agam ooj daayak
Namaste niranjan nigam netinaayak
Namaste maheshwar mahat mooksha daatta
Namaste vibhu vishwa viyapak vidhataa
Namaste Savbhu Satchidanand swami
Namaste niyantaa pranaam namaami.
O Lord! Thou art our Mother and Father, Thou art our
Brother and Friend, thou art knowledge, and wealth,
Thou art everything to us, 0 Supreme Lord.

शान्ति-पाठ

ओ3म् द्यौः शान्तिरन्तरिक्षः शान्ति पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वः शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि।

ओ3म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

द्युलोक में शान्ति विद्यमान है, अन्तरिक्ष में शान्ति है, पृथ्वी शान्त है, जल शान्त है, औषधियां और वनस्पतियां शान्ति देने वाली है, सभी दिव्य पदार्थ सुसंगत और शान्त है, ज्ञान में शान्ति है, विश्व की प्रत्येक वस्तु शान्ति युक्त है, सर्वत्र शान्ति है, वह शान्ति मुझे भी प्राप्त हो।

जय घोष

जो बोले सो अभय, वैदिक धर्म की जय

ब्रह्म ऋषि विरजानन्द जी की जय

महर्षि स्वामी दयानन्द जी की जय

आर्य समाज अमर रहे

वेद की ज्योति जलती रहे

ओम का झंडा ऊंचा रहे

वैदिक ध्वनि

वैदिक अभिनन्दन

भोजन से पहले बोलने का मन्त्र

ओ3म् अन्नतेऽन्नस्य नो देह्यनमीवस्य शुष्मिणः।

प्र प्रदातारं तारिष ऊर्जं नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे॥

हे अन्न के स्वामी ईश, आप हमें रोग-रहित एवं पुष्टिकारक अन्न दें। आप दानी का उद्धार करते हैं, आप हमारे कुटुम्बियों और पशुओं को बल दें।

SHANTIH PATH
(HYMN OF PEACE)

Om Dyauh santirantariksagm santih, prthivi
santihrapah santirosadhyah santih. Vanaspatayah
santirvisve devah santir brahma, santin sarvagm
santih santireva santih sa ma santihredhi

Om shantih shantih shantih

There is peace in the heavenly region, there is peace in the atmosphere; peace reigns on the earth; there is coolness in the water, the medicinal herbs are healing; the plants are peace-giving; there is harmony in the celestial objects and perfection in eternal knowledge; everthing in the universe is peaceful; peace pervades everywhere. May that peace come to me!

May there be peace, peace, peace!

JAY GHOSH

jo bole so abhay, vaidik dharma ki jay
brahm rishi virjanand ji ki jay
maharshi svami dayanand ji ki jay
arya samaj amar rahe
ved ki jyoti jalati rahe
om ka jhanda oonch rahe
vedic dwani vedic abhnandan

THE HYMN TO BE RECITED BEFORE TAKING FOOD

OM ANNAPATE ANNASYA NO DEHYANA-MIVASYA SUSMINAH. PRA PRADATARAM TARISAM URJJAM NODEHI DVIPADE CHATUSPADE.

God, you are Lord of food, give us strengthening and unharmful food, grant happiness to food givers. Bestow strenght on our men and animals.

प्रार्थना

दया कर दान भक्ति का,
हमें परमात्मा देना।
दया करना हमारी आत्मा में,
शुद्धता देना।।

हमारे ध्यान में आओ,
प्रभु आंखों में बस जाओ।
अंधेरे दिल में आकर के,
परम ज्योति जगा देना।।

हमारा कर्म हो सेवा,
हमारा धर्म हो सेवा।
सदा ईमान हो सेवा,
सेवकचर बना देना।।

बहा दे प्रेम की गंगा,
दिलों में प्रेम का सागर।
हमें आपस में मिलजुलकर,
प्रभु रहना सिखा देना।।

वतन के वास्ते मरना,
वतन के वास्ते जीना।
वतन पर जां कुर्बां करना,
प्रभु हम को बता देना।।

राष्ट्रीय प्रार्थना

ओम् आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामा राष्ट्रे राजन्यः शूरऽइषव्योऽतिव्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढा नडानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो नऽओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम्।।

—यजुः 22/22

ब्रह्मन! स्वराष्ट्र में हों द्विज ब्रह्म तेजधारी।
क्षत्रिय महारथी हों अरिदल-विनाशकारी।।
होवें दुधारु गौएँ पशु अश्व आशुवाही।
आधार राष्ट्र की हों नारी सुभग सदा ही।।
बलवान् सभ्य योद्धा यजमान-पुत्र होवें।
इच्छानुसार वर्षे पर्जन्य ताप धोवें।।
फल-फूल से लदी हों औषध अमोघ सारी।
हो योगक्षेमकारी स्वाधीनता हमारी।।

संगठन सूक्त (ऋग्वेद का अन्तिम सूक्त)

ओम् सं समिद्युवसे वृषन्नग्ने विश्वान्यर्य आ।
इडस्पदे समिध्यसे स नो वसून्या भर॥१॥
हे प्रभो! तुम शक्तिशाली हो बनाते सृष्टि को।
वेद सब गाते तुम्हें हैं कीजिए धन-सृष्टि को॥1॥
ओम् संगच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे सं जनाना उपासते॥२॥
प्रेम से मिलकर चलो बोलो सभी ज्ञानी बनो।
पूर्वजों की भांति तुम कर्त्तव्य के मानी बनो॥2॥
समानो मन्त्रः समितिः समानी समानं मनः सह चित्तमेषाम्।
समानं मन्त्रमभिमन्त्रये वः समानेन वो हविषा जुहोमि॥३॥
हों विचार समान सब के चित्त मन सब एक हों।
ज्ञान देता हूं बराबर भोग्य पा सब नेक हों॥3॥
ओम् समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति॥४॥
हों सभी के दिल तथा संकल्प अविरोधी सदा।
मन भरे हों प्रेम से जिससे बढ़े सुख सम्पदा॥4॥

मधुर यादें!

मधुर यादें!